

नए नियम का इतिहास, साहित्य और धर्मशास्त्र

सत्र 21: प्रेरितों के काम 2 और अन्य भाषाएँ और पहली मिशनरी यात्रा

डॉ. टेड हिल्डेब्रांट

ए. द्वारा परिचय [00:25-00:57]

A: संयुक्त AD; 00:00-12:53; प्रेरितों के काम 2 पिनतेकुस्त- 3 चिन्ह

आपका फिर से स्वागत है। हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को कवर कर रहे हैं और हमने आरंभिक चर्च और प्रार्थना तथा चर्च में प्रेरितों, उपयाजकों, एल्डरों और आरंभिक भविष्यवक्ताओं के साथ आरंभिक चर्च के क्रम से शुरुआत की है। हमने लूका के साथ प्रेरितों के काम के उद्देश्य के बारे में बात की है, जो कि संपूर्ण चर्च का एक विस्तृत इतिहास नहीं है, बल्कि एक धर्मशिक्षा है क्योंकि यह वास्तव में पहले भाग में पतरस और फिर दूसरे भाग में पौलुस पर केंद्रित है, और विशेष रूप से प्रेरित पौलुस की मिशनरी यात्राओं पर, जिस पर हम आज चर्चा करेंगे।

बी. प्रेरितों के काम में वर्णनात्मक और निर्देशात्मक [00:57-3:07]

और इसलिए हम एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में प्रेरितों के काम की पुस्तक की ओर बढ़ रहे हैं, इसे तब के ऐतिहासिक दस्तावेज़ से लेकर अब तक के रूप में लिया जा सकता है और जब आपके पास ऐसे सिद्धांत हैं: तुम हत्या नहीं करोगे, तुम चोरी नहीं करोगे, और तुम लालच नहीं करोगे, तो आप उस बदलाव को कैसे करेंगे। ये नुस्खे आते हैं और सार्वभौमिक हैं और ये सभी मानव जाति के लिए, हर समय के लिए मानक घटनाएँ हैं। लेकिन आपके पास जो ऐतिहासिक दस्तावेज़ है, जैसे कि पुराने नियम में, आपके पास मूसा द्वारा लाल सागर को पार करने और पानी के फटने जैसी चीज़ें हैं। ऐसा एक बार हुआ और भगवान ने बहुत शक्तिशाली तरीके से काम किया लेकिन हम पानी के पास आने और इसे हमारे लिए विभाजित करने की उम्मीद नहीं करते हैं। यह एक बार की तरह की बात थी। प्रेरितों के काम 1 की पुस्तक में कहा गया है, "जब तक पवित्र आत्मा तुम पर न आए, तब

तक यरूशलेम में रुको।" यह हमारे लिए नहीं है। मेरा मतलब है कि हम सभी को नहीं जाना चाहिए - काश हम सभी यरूशलेम जा सकते - और यरूशलेम में तब तक प्रतीक्षा करते जब तक पवित्र आत्मा हम पर न आ जाए। ऐसा विशेष रूप से उस मामले में किया गया था, यह एक ऐसी घटना थी जो इतिहास में एक बार हुई थी और इसका इतिहास में सार्वभौमिकीकरण या सामान्यीकरण नहीं किया जाना चाहिए। और इतिहास का बहुत सारा हिस्सा निर्देशात्मक होने के बजाय वर्णनात्मक है। "क्या करना चाहिए" और "क्या करना चाहिए" निर्देशात्मक हैं। इसलिए आपके पास निर्देशात्मक चीजें हैं, जैसे "तुम हत्या नहीं करोगे" या "सुसमाचार को पूरी दुनिया में फैलाओ, उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दो।" यह कुछ ऐसा है जो चर्च का है - यह चर्च का महान आदेश है - यह चर्च द्वारा किया जाना है। इसलिए यह मानक है, यही वह है जो हम सभी को करना चाहिए या करना चाहिए। यह निर्देशात्मक है। जबकि, वर्णनात्मक घटनाएं यीशु के पानी पर चलने जैसी चीजें होंगी। मैं पानी पर चलने की उम्मीद नहीं करता, और यह अधिक वर्णनात्मक है, जो हुआ उसका वर्णन करता है। लेकिन इतिहास में जो हुआ वह एक बार की तरह की चीज थी। वहां और फिर जो हुआ उसका सार्वभौमिकीकरण नहीं किया जाना चाहिए।

इसलिए प्रेरितों के काम की पुस्तक में, यह प्रश्न उठता है कि क्या मानक है, क्या सिद्धांत है, क्या किया जाना चाहिए या क्या करना चाहिए और हम सभी के लिए क्या निर्देशात्मक है बनाम क्या वर्णनात्मक है। विशेष रूप से आज हम जो चर्चा करने जा रहे हैं वह अन्यभाषा में बोलने पर है। हम अभी प्रेरितों के काम 2 को देखने जा रहे हैं।

सी. पेंटेकोस्टल चर्च और विभिन्न व्याख्याएँ [3:07-6:13]

हमने कुछ पृष्ठभूमि के साथ इसे स्थापित करने के बारे में थोड़ी बात की थी। 1970 के दशक में गृहयुद्ध के ठीक बाद जीभ से बोलने के साथ मेरा पहला अनुभव और इसलिए आज मैं जो करना चाहता हूँ वह है उस पर काम करना, और चलो बस थोड़ा सा समीक्षा करते हैं। हमने वहाँ कुछ चीजों की पृष्ठभूमि पर चर्चा की। मैं किस आधार पर निर्णय लेता हूँ कि कोई चीज ईश्वर की ओर से है या नहीं? मेरे पास इस कमरे में ये सभी बच्चे थे और वे

सभी कुछ कर रहे थे। मैं कैसे जानूँ कि यह ईश्वर की ओर से है या यह उनकी ओर से है या यह किसी बुरी चीज की ओर से है? वहाँ क्या चल रहा था? क्या अनुभव हमेशा निर्णय लेने के लिए सबसे अच्छा मार्गदर्शक होता है? और इसलिए आप कहते हैं, "ठीक है, मैंने इसका अनुभव किया है।" वैसे, आपके पास सभी प्रकार के अनुभव हैं; मुझे यकीन नहीं है कि अनुभव हमारा सबसे अच्छा मार्गदर्शक है। बाइबल आध्यात्मिक अनुभव का एकमात्र निर्णायक है और इसलिए बाइबल वह है जो हम जानते हैं कि शास्त्र ईश्वर से बोलते हैं। हम इसे अपने व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित नहीं करते हैं क्योंकि हमारे अनुभव हमारे दिमाग में बन सकते हैं। हालाँकि शास्त्र ईश्वर का वचन है और इसलिए हम चीजों को उसी पर आधारित करते हैं। क्या प्रेरितों के काम 2 सभी समय के लिए आदर्श है? क्या सभी ईसाइयों के लिए, हर समय ऐसा ही होना चाहिए? प्रेरितों के काम 2 में क्या हुआ? आइए थोड़ा सा इस पर विचार करें।

अधिनियम 2 पेंटेकोस्ट पर एक महान अध्याय है। वास्तव में पेंटेकोस्टल चर्च नामक पूरे चर्च हैं और उन्होंने मसीह के कारण के लिए महान कार्य किया है। और आपके पास अन्य चर्च हैं, उदाहरण के लिए, अधिक मेनोनाइट प्रकार के चर्च जो माउंट पर उपदेश लेंगे। और इसलिए विभिन्न चर्च बाइबल के विभिन्न भागों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और यह उनका ध्यान केंद्रित हो जाता है। और इसलिए, एक मेनोनाइट चर्च की तरह, माउंट पर उपदेश, माउंट पर उपदेश, माउंट पर उपदेश। फिर आप जानते हैं कि माउंट पर उपदेश के विपरीत चीजें वे हमेशा माउंट पर उपदेश के प्रकाश में व्याख्या करते हैं। इसलिए वे अक्सर बहुत शांतिवादी होते हैं। आप उन पर कुछ और अंश डालते हैं, वे वास्तव में उन्हें बहुत अच्छी तरह से संभाल नहीं पाते हैं। कैसे सब कुछ माउंट पर उपदेश के चश्मे से देखा जाता है, दूसरा गाल मोड़ना जैसी चीजें।

पेंटेकोस्टल चर्च अधिनियम 2 पर जोर देंगे। बेशक, सुधारित प्रेस्बिटेरियन चर्च रोमियों 8, रोमियों 9, गलातियों की पुस्तक, इफिसियों 1 और उन कुछ पॉलिन अंशों पर जोर देंगे जहां वे पूर्वनिर्धारण और चुनाव पर वास्तव में मजबूत हैं। इसलिए वे रोमियों और गलातियों के माध्यम से पूरी बाइबिल देखेंगे। इसलिए जब वे जेम्स जैसी पुस्तक के सामने

आते हैं, तो वे जेम्स को गलातियों और रोमियों के प्रकाश में देखते हैं और जेम्स को जरूरी नहीं कि खुद के लिए खड़ा होने दें। अब, मुझे एहसास हुआ कि मैं इन सब पर दुश्मनी नहीं करना चाहता, लेकिन यह सिर्फ अलग-अलग तरह के दृष्टिकोण हैं। मसीहाई ईसाई समुदाय पुराने नियम को ले सकता है और पुराने नियम के स्तर को ऊपर उठा सकता है और वे यीशु को यहूदी होने के संदर्भ में कई सामान्य चर्चों की तुलना में बहुत अधिक देखते हैं - मुझे सामान्य नहीं कहना चाहिए - लेकिन कई अन्य चर्च विशेष रूप से पुराने नियम से यीशु की यहूदीता को नहीं दिखाएंगे। इसलिए पेंटेकोस्टल चर्च अधिनियम 2 और यहाँ क्या हो रहा है पर जोर देते हैं। और हम सभी एक या दूसरे तरीके से उस तरह की चीजें करते हैं।

D. फसह पर्व का संदर्भ [6:13-9:32]

चलिए इसका वर्णन करते हैं। तो, यह पिनतेकुस्त के दिन हुआ। यीशु फसह के दिन मरे और फिर तीन दिन बाद जी उठे। फिर अपने पुनरुत्थान के बाद उन्होंने वहाँ लगभग 40 दिनों तक लोगों को खुद को दिखाया और फिर स्वर्ग चले गए। तो आपके पास पुनरुत्थान है, जब मसीह मृतकों में से वापस आते हैं। फिर वे प्रेरितों से मिलते हैं, कुछ महिलाओं के साथ, दो लोगों के साथ जो इम्माऊस के रास्ते पर यात्रा कर रहे थे। वे एक ही समय में 500 लोगों को खुद को दिखाते हैं, और वे एक ही समय में 12 लोगों को, प्रेरितों को खुद को दिखाते हैं। इसके बाद वे बाद में दमिश्क के रास्ते पर प्रेरित पौलुस को भी खुद को दिखाते हैं। तो आपके पास 500 लोग हैं जो यीशु को देखते हैं, 12 लोग, फिर 2 लोग, विभिन्न संदर्भों में, सभी एक ही वातावरण में नहीं। एक दमिश्क के रास्ते पर है, एक गलील में मछली पकड़ रहा है, और वे वहाँ दिखाई देते हैं। तो भूगोल बिल्कुल अलग है, जैसा कि यीशु को देखने वाले लोगों की विविधता है। यीशु मृतकों में से जी उठे। यह ऐतिहासिक है; हम इसे आधारभूत रूप से लेते हैं कि यह वास्तव में इतिहास में हुआ था, न कि केवल धर्मशास्त्र में, बल्कि यह वास्तव में इतिहास में हुआ था और इसकी गवाही 500 लोगों, 12 लोगों, 2 लोगों, महिलाओं, आदि आदि ने कई बार दी है। तो यही है कि यीशु मृतकों में से जी उठे।

फिर वह 40 दिनों के लिए खुद को प्रकट करता है और फिर वह ऊपर चढ़ जाता है;

इसे आरोहण कहा जाता है, जब यीशु पिता के दाहिने हाथ पर बैठने के लिए स्वर्ग वापस जाता है। फिर उसके लगभग दस दिन बाद आपके पास वह होता है जिसे पेंटेकोस्ट कहा जाता है। *पेंटा* का मतलब 5 होता है, जैसे पंचकोण एक पाँच-पक्षीय आकृति है। पेंटेकोस्ट फसह के 50 दिन बाद होता है। इसलिए आमतौर पर फसह वसंत में होता है, यही वह समय होता है जब हम स्पष्ट कारणों से अपना ईस्टर मनाते हैं, यीशु वास्तव में फसह से ठीक पहले मर गए और फसह के ठीक बाद जी उठे। इसलिए हमारे लिए फसह और ईस्टर एक तरह से समन्वयित हैं। फिर 50 दिन बाद आपके पास पेंटेकोस्ट का पर्व होता है और ये हैं--यहूदी पर्व वसंत में, यहूदी पर्व प्रणाली में वे वसंत में होते हैं और आमतौर पर वे वसंत में गेहूं और जौ की फसल का प्रतीक होते हैं। वे फसल की शुरुआत हैं, वसंत में गेहूं और जौ की फसल का अंत। अन्य तीन त्यौहार जो यहूदी मनाते हैं वे पतझड़ में होते हैं, और वे त्यौहार जो झोपड़ियों के त्यौहार, प्रायश्चित के दिन और तुरही के त्यौहार से जुड़े हैं, वे पतझड़ में मनाए जाते हैं। वे अंगूर, जैतून और अंजीर की फसल के साथ समन्वय करते हैं। ये अन्य फसल की चीजें हैं जो वे करते हैं। फल, अंगूर जैतून और अंजीर की कटाई पतझड़ में की जाती है, और वे त्यौहार उससे जुड़े होते हैं।

तो हमारे पास जो है वह यह है कि तीन तीर्थयात्रा पर्व हैं जिनके लिए सभी लोग यरूशलेम जाते हैं। फसह उनमें से एक है, दूसरा पित्तेकुस्त है; ये दोनों वसंत ऋतु में आते हैं। झोपड़ियों का पर्व या झोपड़ियों का पर्व या सुकोट का पर्व जैसा कि वे इसे कहते हैं, क्योंकि आपको सात दिनों तक सुक्का, एक छोटे से तम्बू जैसी संरचना में रहना होता है, जो पतझड़ में होता है। सभी यहूदियों को इन तीन पर्वों के लिए यरूशलेम आना चाहिए। तो पित्तेकुस्त पर यहाँ उन तीर्थयात्रा पर्वों में से एक है जहाँ दुनिया भर से यहूदी पित्तेकुस्त के पर्व के लिए यरूशलेम की तीर्थयात्रा करेंगे। तो इस समय वहाँ दुनिया भर से लोग होंगे।

ई. पित्तेकुस्त पर आत्मा के तीन संकेत [9:32-12:53]

अब, वास्तव में क्या होता है? पित्तेकुस्त के इस पर्व में वास्तव में तीन संकेत होते हैं और अन्यभाषा में बोलने के समन्वय में तीन संकेत होते हैं। "जब पित्तेकुस्त का दिन आया,

तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।" पहला संकेत: "अचानक आकाश से तेज हवा के चलने जैसी आवाज आई और पूरे घर में जहां वे बैठे थे, भर गई।" तो पहला संकेत यह था कि एक शक्तिशाली हवा आई और पूरे घर में भर गई। यह पहला संकेत है। दूसरा संकेत: "उन्होंने देखा कि आग की जीभें अलग हो गईं और उनमें से प्रत्येक पर आकर रुक गईं।" तो अब आपके पास प्रेरितों के पास आग की जीभें हैं, इसलिए हवा चलती है, आग उन पर है "और वे सभी पवित्र आत्मा से भर गए और अन्यभाषाएँ बोलने लगे।" अब ग्रीक में अन्यभाषाओं के लिए शब्द *ग्लोसा* है जो हमें "ग्लोसोलालिया" कहे जाने वाले शब्द का आधार देता है। ग्लोसोलालिया को वे अन्यभाषाएँ बोलना कहते हैं। इसके कई रूप हैं, लेकिन ग्लोसोलालिया का अर्थ है अन्य भाषाओं में बोलना। वास्तव में ग्लोसोलालिया अंग्रेजी शब्द है, लेकिन यह "जीभ" या "भाषा" के लिए ग्रीक शब्द पर आधारित है। जीभ के लिए ग्रीक शब्द और भाषा के लिए शब्द एक ही शब्द हैं। तो जीभ और भाषा एक ही शब्द हैं, यह *ग्लोसा*। और इसलिए यह कहा जाता है, "वे अन्य भाषाओं में या अन्य भाषाओं में बोलते थे, जैसा कि आत्मा ने उन्हें सक्षम किया। अब वहाँ स्वर्ग के नीचे हर देश से परमेश्वर का भय मानने वाले यहूदी रह रहे थे, और फिर जब उन्होंने आवाज़ सुनी तो एक भीड़ इकट्ठी हो गई।" तो आपको प्रेरित मिलते हैं लेकिन अब एक भीड़ है, "घबराहट में इकट्ठी हुई क्योंकि हर एक ने उन्हें अपनी भाषा में बोलते हुए सुना।" तो वहाँ एक भीड़ इकट्ठी हुई है, वे दुनिया भर से हैं और इसलिए तुर्की और ग्रीस और विभिन्न स्थानों में बोली जाने वाली बोलियाँ हैं। ये प्रवासी यहूदी जो बिखरे हुए थे, यरूशलेम आते हैं और अचानक वे उन्हें अपनी मूल भाषा में बोलते हुए सुनते हैं जहाँ वे उस विदेशी भूमि में पले-बढ़े थे। इसमें वास्तव में भाषा सूचीबद्ध है, "वे बहुत आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने पूछा, 'क्या ये सभी लोग जो बोल रहे हैं वे गलीली नहीं हैं?'" गलीली कहना ऐसा होगा जैसे कि वे पिछड़े हुए ग्रामीण हैं। हिक्सविले के ये ग्रामीण मेरी भाषा कैसे जानते हैं, जबकि वे कभी फिलिस्तीन के जेरूसलम गलील क्षेत्र से बाहर नहीं गए हैं? वे मेरी भाषा कैसे जान सकते हैं? "तो फिर ऐसा कैसे है कि हम में से प्रत्येक उन्हें अपनी मूल भाषा में सुनता है?" फिर से, इस बात पर जोर दिया गया है कि हम उन्हें अपनी मूल भाषा में सुन रहे हैं और वे समझते हैं कि क्या कहा जा रहा है क्योंकि वे इसे अपनी मूल

भाषा में सुनते हैं। “पार्थियन, मेदी, एलामाइट, मेसोपोटामिया, जुडिया, कप्पादोसिया, पोंटस और एशिया [एशिया, यह तुर्की का प्रांत है, चीन जैसा एशिया नहीं], फ्रीगिया, पैम्फिलिया, मिस्र और लीबिया के कुछ हिस्सों के निवासी, रोम से आए आगंतुक, यहूदी और धर्मांतरित दोनों, क्रेते और अरब से। हम उन्हें अपनी भाषा में, [या, अपनी भाषा में] परमेश्वर के चमत्कारों की घोषणा करते हुए सुनते हैं। आश्चर्यचकित और हैरान होकर उन्होंने पूछा कि इसका क्या मतलब है? उनमें से कुछ ने मज़ाक उड़ाया और कहा, 'उन्होंने बहुत ज़्यादा शराब पी ली है।'”

एफ. भीड़ के शुरुआती विचार और आत्मा का एकीकृत कार्य [12:53-15:10]

बी: संयुक्त एफजी; 12:53-20:39; आत्मा का कार्य, प्रेरितों के काम 2

अब कोई व्यक्ति इस तरह की टिप्पणी क्यों करेगा? क्या यह संभव है कि जब कोई व्यक्ति बहुत ज़्यादा शराब पी लेता है, तो वह अपनी मातृभाषा में वापस चला जाता है? तो जब कोई व्यक्ति नशे में होता है, तो मान लीजिए कि आप अमेरिका से हैं, आप फ्रांस में हैं, और आपने बहुत ज़्यादा शराब पी ली है, और जब आप फ्रांस में होते हैं, तो आप थोड़ी *पार्लेज़ बोलते हैं आप फ्रैंकैस* और आप उनसे फ्रेंच में बात करते हैं लेकिन फिर अचानक जब आप उनसे ज़्यादा से ज़्यादा बात करते हैं, तो आप नशे में आ जाते हैं, जब आप नशे में होते हैं तो आप अपनी मूल भाषा में वापस आ जाते हैं, यानी अंग्रेज़ी। इसलिए लोग कह रहे थे कि शायद ये लोग नशे में हैं और वे सिर्फ़ भाषा को दोहरा रहे हैं या अपनी मूल भाषा में वापस आ रहे हैं और इस तरह की चीज़ें कर रहे हैं और वे ग्रीक या अरामी में बात नहीं कर रहे हैं, जो उस समय यहूदियों के लिए ज़्यादा सार्वभौमिक भाषा रही होगी।

तो यह पेंटेकोस्ट आत्मा के तीन संकेत हैं और फिर आपको पवित्र आत्मा का यह बपतिस्मा मिला है। हमें यह उल्लेख करना चाहिए कि पवित्र आत्मा का यह बपतिस्मा उन पर आता है और यह है - मैं पढ़ना चाहता हूँ कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा क्या है क्योंकि यह वास्तव में एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। यहीं पर हमें पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का संदर्भ मिलता है जो 1 कुरिन्थियों 12:13 में है। यह वर्णन करता है कि पवित्र आत्मा का

बपतिस्मा क्या है। 1 कुरिन्थियों 12:13। यह कहता है: "क्योंकि हम सब एक आत्मा से एक शरीर में बपतिस्मा लेते हैं।" पवित्र आत्मा का बपतिस्मा वह कार्य है जिसके द्वारा आत्मा यहूदियों और अन्यजातियों को एक शरीर में बांधती है - चाहे यहूदी हों या यूनानी, गुलाम हों या स्वतंत्र - हम सभी को पीने के लिए एक आत्मा दी जाती है।" तो बपतिस्मा वह कार्य है जिसमें आत्मा यहूदियों और अन्यजातियों को एक साथ बांधती है, गुलाम और स्वतंत्र। पॉल गलातियों 3:28 में कहता है, "न तो कोई नर और न ही नारी को जानता है, हम सब मसीह में एक हैं।" हम सभी को एक ही आत्मा पीने के लिए दी गई है। इसलिए यह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा है जो आत्मा का कार्य करता है जो यहूदियों और अन्यजातियों को एक चर्च, एक समुदाय में एक साथ बांधता है।

जी. अन्यभाषा में बोलने से संभावित समस्या [15:10-20:39]

तो, अब मुझे लगता है कि कभी-कभी एक समस्या होती है, मुझे लगता है कि कुछ लोगों के साथ जो अन्य भाषा में बोलते हैं, वे इसे आध्यात्मिकता के उच्च स्तर पर पहुँचने के तरीके के रूप में देखते हैं। यदि आपने अन्य भाषाओं में बात नहीं की है, तो आप आध्यात्मिकता की सीढ़ी पर नीचे हैं। आपको इस बारे में बहुत सावधान रहना होगा। वैसे, यहूदा ने मसीह के नाम पर चमत्कार किए। मैथ्यू 10 में, यीशु बारह लोगों को भेजता है। यहूदा उनमें से एक है और वे शहर-शहर जाकर चमत्कार करने वाले प्रचारक बन जाते हैं। यहूदा उनमें से एक था। इसलिए यदि कोई व्यक्ति मसीह के नाम पर चमत्कार करता है, तो इसका मतलब यह नहीं है कि वह पूरी तरह से ठीक है, क्योंकि यहूदा ने स्पष्ट रूप से मसीह को धोखा दिया था। इसलिए आपको किसी से सावधान रहना होगा, यदि वे कहते हैं कि वे अन्य भाषाओं में बोलते हैं, तो वे अचानक आध्यात्मिक रूप से दिग्गज बन जाते हैं। तो आपके पास एक ऐसा व्यक्ति है जो मसीह को उसके जीवन के लिए जानता है और मसीह के साथ चलता है और मसीह और अन्य चीजों को जानता है, और यह व्यक्ति, जो मसीह को तीन सप्ताह से जानता है, अन्य भाषाओं में बोलता है और अचानक वह उस व्यक्ति की तुलना में अधिक आध्यात्मिक दिग्गज बन जाता है जो पचास वर्षों से मसीह को जानता और

उनके साथ चलता रहा है। इसलिए आपको इस तात्कालिक आध्यात्मिकता के बारे में सावधान रहना होगा, ऐसा कोई एक संकेत नहीं है जो मेरी आध्यात्मिकता को दर्शाता हो। आपको वाकई बहुत सावधान रहना होगा, यह वाकई खतरनाक है क्योंकि यह आत्मा द्वारा हमें एक साथ जोड़ने के बजाय ऐसा करता है - आपके पास ऐसी चीजें हैं जैसे इस सेमेस्टर में मेरे एक छात्र मित्र ने मुझे इस वननेस चर्च के बारे में बताया, जहाँ, यह वननेस चर्च कहता है कि आपको अन्य भाषाओं में बोलना होगा या आप ईसाई नहीं हैं। आपको अन्य भाषाओं में बोलना होगा या आप ईसाई नहीं हैं। यह एक समस्या है।

आप देखते हैं कि हमारे द्वारा ज्ञात कुछ महान संतों ने कभी भी अन्य भाषाओं में बात नहीं की थी, इसलिए यह एक वास्तविक, एक वास्तविक समस्या बन जाती है। मुझे बस ऐसे कुछ लोगों की सूची बनाने दें। मुझे यकीन नहीं है कि हम नोट्स में इस पर वापस आएंगे या नहीं, लेकिन यह बहुत दिलचस्प है। मार्टिन लूथर द्वारा अन्य भाषाओं में बात करने का कोई रिकॉर्ड नहीं है। मार्टिन लूथर, एक महान सुधारक, एक महान प्रोटेस्टेंट, वहाँ का पूरा आंदोलन; चार्ल्स स्पेर्जन सभी समय के सबसे महान बैपटिस्ट प्रचारकों में से एक ने कभी अन्य भाषाओं में बात नहीं की, जॉन वेस्ले, जहाँ तक हम जानते हैं, कभी अन्य भाषाओं में बात नहीं की; बिली ग्राहम जहाँ तक हम जानते हैं, बीसवीं सदी के एक महान प्रचारक बिली ग्राहम ने कभी अन्य भाषाओं में बात नहीं की। वैसे, क्या यह कभी यीशु द्वारा अन्य भाषाओं में बात करने का रिकॉर्ड करता है? कभी भी यीशु द्वारा अन्य भाषाओं में बात करने का रिकॉर्ड नहीं है। ठीक है, आप कहते हैं, पॉल कहते हैं, "मैं उन सभी से अधिक अन्य भाषाओं में बोलता हूँ।" खैर, यह अधिक संभावना है कि पॉल को अधिक भाषाएँ आती थीं क्योंकि वह इधर-उधर यात्रा कर रहा था और वह इफिसुस में तीन साल और कुरिन्थ में दो साल तक रहा, जहाँ उसने सभी जगहों से बोलियाँ सीखी होंगी। इसलिए आपको इस बात से सावधान रहना होगा; हमारे द्वारा ज्ञात सभी महान संतों में से कुछ ने कभी भी अन्य भाषाओं में बात नहीं की। इसलिए इस बात से सावधान रहें।

जैसा कि हमने अभी कहा, अन्य भाषाओं का उद्देश्य और नशे का आरोप, यदि लोग नशे में होने पर द्विभाषी हैं तो वे भाषा बदल देंगे। पीटर कहते हैं, "ये लोग नशे में नहीं हैं जैसा कि

आप सोच रहे हैं क्योंकि अभी सुबह के नौ बजे हैं," इसके लिए अभी बहुत जल्दी है। इसलिए पीटर उस आरोप का खंडन करते हैं। मुझे लगता है कि इसके साथ एक कारक यह भी है कि हमें यह पहचानना होगा कि अभी तक कोई नया नियम नहीं है। पिन्तेकुस्त के समय प्रेरितों के काम की पुस्तक, हम बात कर रहे हैं कि ईसा मसीह 32, 33 ई. में मर रहे थे, कोई नया नियम नहीं है। मैथ्यू, मार्क, ल्यूक, जॉन, इनमें से कोई भी पुस्तक अभी तक नहीं लिखी गई है। प्रेरितों के काम की पुस्तक कम से कम 60 ई. तक, 60 के दशक के मध्य, 64, 65 या कुछ इसी तरह लिखी गई होगी। पॉलिन के सभी पत्र कम से कम 10, 15 साल पहले लिखे गए होंगे, जब पॉल ने लिखना शुरू किया था। इसलिए कोई नया नियम नहीं है। परमेश्वर के इस संचार में आत्मा का कार्य, परमेश्वर का यह प्रकाशन आत्मा के माध्यम से आता है क्योंकि इस समय कोई नया नियम नहीं है, और मैं सोचता हूँ कि यह इसका एक हिस्सा है।

लेकिन दूसरे आशीर्वाद के विचार से सावधान रहें। "मुझे मसीह मिल गया है; मैं एक ईसाई हूँ। लेकिन मुझे सब कुछ नहीं मिला है।" इसलिए आध्यात्मिकता का दूसरा स्तर है और जब आप अन्य भाषाओं में बोलते हैं तो आप स्वतः ही आध्यात्मिकता के दूसरे स्तर पर पहुँच जाते हैं। जब आप मसीह को स्वीकार करते हैं तो आप मसीह की आत्मा को स्वीकार करते हैं। इस तरह की चीज़ों से सावधान रहें, मुझे लगता है कि यह तत्काल आध्यात्मिकता का विचार बहुत खतरनाक है। वैसे यह हमारी संस्कृति के साथ बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है, क्योंकि हम एक माइक्रोवेव संस्कृति हैं जो हमें चीज़ें अभी चाहिए। हम अभी परिपक्व होना चाहते हैं, हम अपनी परिपक्वता और बुद्धिमानी में उम्र का इंतज़ार नहीं करना चाहते - हम इसे तुरंत चाहते हैं। हम बाहरी संकेत चाहते हैं जो हमारी स्थिति की पुष्टि करेंगे और मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि यहूदा के पास भी कई पुष्टि संकेत थे। इसलिए हमें पवित्रशास्त्र में कहीं भी अन्यभाषाओं के उपहार की तलाश करने के लिए नहीं सिखाया गया है, ऐसा नहीं सिखाया जाता है और यहाँ मसीह, वेस्ले, स्पर्जन और लूथर के बारे में यह टिप्पणी है और मेरा मानना है कि ऑगस्टीन, संत ऑगस्टीन को भी आप उस श्रेणी में रख सकते हैं, जिन्होंने कभी अन्यभाषाओं में बात नहीं की। ये काफी महत्वपूर्ण लोग हैं, मुझे नहीं लगता कि आप उन्हें आध्यात्मिक बौने के रूप में उड़ा देना चाहते हैं क्योंकि उन्होंने कभी

अन्यभाषाओं में बात नहीं की, इसलिए उस तर्क से सावधान रहें। प्रेरितों के काम 2 में अन्यभाषाओं में बात करने का उद्देश्य यह बताना था कि मसीह जी उठे थे और आत्मा नीचे आ गई थी और आत्मा मूल रूप से इन लोगों पर थी।

H. सामरियों पर आत्मा का आना [20:39-27:39]

सी: HI; 20:39-30:17; प्रेरितों के काम 2 के बाहर की अन्यभाषाओं को प्रेरितों के काम में शामिल करें

तो, मैं आगे जो करना चाहता हूँ वह यह है कि पिन्तेकुस्त के दिन यहूदी लोगों पर आत्मा आती है जो पूरी दुनिया से इकट्ठे हुए हैं और आत्मा उन पर आती है और वे उन अन्य लोगों के लिए एक संकेत के रूप में अन्य भाषाओं में बोलते हैं कि वास्तव में आत्मा उन पर आई थी, कि मसीह जी उठे थे और आत्मा उन पर आई थी और मसीह स्वर्ग चले गए थे। लेकिन आइए अन्य स्थानों पर देखें जहाँ वही बात होती है। हम यहाँ प्रेरितों के काम की पुस्तक के माध्यम से कुछ लोगों से कुछ काफी दिलचस्प बातें देखने जा रहे हैं।

इसलिए यदि आप नीचे जाएं और हम यहां अपना अगला अंश, अध्याय 8 पद 17 उठाते हैं और मुझे अध्याय 8 पद 17 में इनमें से कुछ चीजों के साथ काम करने दें। पीटर और जॉन सामरियों के पास जाते हैं। अब आपको यहूदियों और सामरियों के बीच का अंतर और उन दो संस्कृतियों और उन दो धार्मिक घटनाओं के बीच की दुश्मनी याद है। यहां तक कि यीशु और कुएं पर मौजूद महिला को भी याद करें, आप जानते हैं, "हम इस पहाड़ पर भगवान की पूजा करते हैं, आप यरूशलेम में भगवान की पूजा करते हैं।" और यीशु को इस महिला से बातचीत करनी है जो एक सामरी है जो यहूदी काम करने के तरीके के बारे में यीशु के साथ बहुत ही तीखी है। तो हमारे पास प्रेरितों की पुस्तक के अध्याय 8 पद 17 में क्या है, यह कहता है, "तब पीटर और जॉन ने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया," और इसे समझें, "पीटर और जॉन ने उन पर हाथ रखे," पीटर और जॉन चर्च के प्रतिनिधि नेता हैं। पीटर और जॉन को साथ में घूमते हुए देखें, वे दोनों लोग साथ में काफी यात्रा करते हैं और वे गलील की झील पर साथ में दोस्त और मछुआरे लगते हैं। यीशु ने

जेबेदी के बेटे पीटर और जॉन को बुलाया और वे दोनों वहाँ मछुआरे थे। इसलिए उनके बीच बहुत कुछ समान था, और उन्होंने साथ में बहुत यात्रा की। पीटर, जेम्स और जॉन तीनों ही ऐसे थे जिन्हें यीशु ने रूपांतरण, मृत लड़की, गेथसेमेन में विशेष स्थानों तक जाने दिया। जेम्स की मृत्यु जल्दी हो जाती है; पीटर और जॉन साथ में घूमते हैं। इसलिए हम यहाँ देखते हैं, पीटर और जॉन सामरियों पर हाथ रखते हैं और आत्मा उन पर आती है; वे पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं। अब, यह प्रेरितों के काम 8 में नहीं कहा गया है कि उन्होंने अन्य भाषाओं में बात की, लेकिन मैं जो सुझाव दूंगा वह यह है कि उन्होंने अन्य भाषाओं में बात की क्योंकि आप जो चाहते हैं वह वही है जो पिनतेकुस्त पर हुआ था, ठीक उसी तरह जैसे यहूदियों ने किया था। इसलिए यहूदी यह नहीं कह पाएंगे, "ठीक है, हमने आत्मा प्राप्त की और हमने अन्य भाषाओं में बोलते हुए सुना। लेकिन सामरी, उन्होंने सिर्फ पवित्र आत्मा प्राप्त की और उन्होंने अन्य भाषाओं में बात नहीं की, इसलिए वे वास्तव में हमारे जैसे अच्छे नहीं हैं।" फिर आपको यह तनाव आना चाहिए। तो मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि, यह हमें यह नहीं बताता कि उन्होंने अन्य भाषाओं में बात की, लेकिन मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जिसे हम मान सकते हैं कि उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त की और उन्होंने वही उपहार प्रकट किए जो यहूदियों ने किए थे, इसलिए यह सम-स्टीवन है। और इसलिए अब सामरी - और आप देख सकते हैं कि क्या हो रहा है। यहूदी चर्च में शामिल हो गए हैं। अब सामरी, प्रेरितों के काम 8:17 में, पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं। आत्मा अपने चर्च का निर्माण कर रही है। पहले यहूदी और फिर प्रेरितों के काम 8:17 में सामरी।

अगला अंश जो समूह पर आत्मा के आने का उल्लेख करता है, वह प्रेरितों के काम 10:44 में कुरनेलियुस के साथ है। याद रखें कि कुरनेलियुस उन पहले गैर-यहूदियों में से एक था जिन्होंने मसीह को स्वीकार किया था। और अब आपके पास मसीह को स्वीकार करने वाला एक गैर-यहूदी है। सवाल गलातियों की पुस्तक और अन्य जगहों पर था: क्या गैर-यहूदियों को ईसाई बनने के लिए पहले यहूदी बनना था? देखिए यहूदी यहूदी धर्म से ईसाई धर्म में चले गए। अब क्या गैर-यहूदियों को पहले यहूदी बनना था, यानी, क्या उन्हें खतना करवाना था, और फिर ईसाई बनना था? गलातियों की पुस्तक में, और वास्तव में जैसा कि

हम एक मिनट में देखने जा रहे हैं, 50 ईस्वी में यरूशलेम परिषद ने कहा, "नहीं, नहीं, गैर-यहूदियों को खतना करवाने की ज़रूरत नहीं है। गैर-यहूदी पहले यहूदी बने बिना भी ईसाई बन सकते हैं।" यह एक बड़ा महत्वपूर्ण कदम था। कुरनेलियुस वह उदाहरण था जिसका उपयोग परमेश्वर ने कुरनेलियुस के रूप में किया और मूल रूप से पतरस को भोजन के नीचे आने का दर्शन दिया। पीटर कहते हैं, "अरे, मैंने कभी भी गैर-कोषेर कुछ नहीं खाया है। मैंने जो कुछ भी खाया है, उसके डिब्बे पर हमेशा "के" लिखा होता है। यह कोषेर है और मैंने कभी भी गैर-कोषेर कुछ नहीं खाया है।" और परमेश्वर कहते हैं, "जिसे मैंने शुद्ध कहा है, उसे अशुद्ध मत कहो।" यह संदेश देता है कि अब खाद्य पदार्थ शुद्ध थे, और अन्यजातियों को स्वीकार किया जाना था। तो यह कुरनेलियुस और पीटर का दर्शन है। आइए प्रेरितों के काम 10:44 को देखें, और यहाँ यह लिखा है : "जब पतरस अभी भी ये शब्द बोल रहा था, पवित्र आत्मा उन सभी पर उतरा जिन्होंने संदेश सुना। खतना किए हुए विश्वासी (जो यहूदी थे) जो पीटर के साथ आए थे, वे आश्चर्यचकित थे कि पवित्र आत्मा का उपहार अन्यजातियों पर भी डाला गया था।" क्या आप सुन सकते हैं कि आत्मा हम पर डाली गई है, लेकिन उन गंदे अन्यजातियों, खतना न किए गए अन्यजातियों ने भी अब पवित्र आत्मा प्राप्त कर ली है? और उन्हें कैसे पता चला, उन्हें कैसे पता चला कि उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हुई है? "उन्होंने उन्हें अन्य भाषाओं में बोलते और परमेश्वर की स्तुति करते सुना।" फिर उसके बाद उन्हें पानी से बपतिस्मा दिया गया। प्रेरितों के काम 10:47 में पानी से बपतिस्मा दिया गया, लेकिन उन्हें आत्मा से बपतिस्मा दिया गया। इस बात का क्या संकेत था कि उन्हें वास्तव में आत्मा द्वारा बपतिस्मा दिया गया था? मेरा सुझाव है कि गैर-यहूदी शायद अन्य भाषाओं में बोल रहे थे। प्रत्येक व्यक्ति ने उन्हें अपनी भाषा में सुना, वह कौन सी भाषा होगी? यदि आप यहूदी लोग हैं और ये लोग गैर-यहूदी हैं, तो वे यूनानी बोलते हैं, और आप यूनानी बोलते हैं। अचानक गैर-यहूदी शायद धाराप्रवाह अरामी या हिब्रू संभवतः अरामी में आ गए होंगे। फिर यहूदी कहते हैं "वाह, ये लोग, वे अरामी नहीं जानते क्योंकि वे लैटिन भूमिका और ग्रीक में अधिक हैं और वे अरामी नहीं जानते।" और अचानक, वे अरामी में धाराप्रवाह हो जाते हैं और वे परमेश्वर की स्तुति करते हैं। और फिर वे निष्कर्ष निकालते हैं, "यह परमेश्वर की ओर

से है।" दूसरे शब्दों में, प्रेरितों के काम 10:44 में यह बात कही गई है कि यहूदियों ने पवित्र आत्मा प्राप्त किया, उन्होंने एक संकेत के रूप में अन्य भाषाओं में बात की। सामरियों ने पवित्र आत्मा प्राप्त किया, उन्हें इसमें शामिल किया गया है। अब गैर-यहूदी, यहाँ तक कि गैर-यहूदी भी अब चर्च में शामिल हो गए हैं और इसका क्या संकेत है कि उन्हें उसी तरह आत्मा प्राप्त हुई है जिस तरह से हमें मिली थी? वे अन्य भाषाओं में बात करते थे। और इसलिए हम जानते हैं कि जिस तरह से हम अन्य भाषाओं में बात करते थे, उसी तरह जब आत्मा उन पर आई तो उन्होंने भी अन्य भाषाओं में बात की। तो अब आपके पास चर्च क्या है? यह अब यहूदियों, सामरियों और यहाँ तक कि खतना न किए गए गैर-यहूदियों से बना है।

I. जॉन बैपटिस्ट के शिष्यों को चर्च में जोड़ना [27:39-30:17]

अब चर्च में, प्रेरितों के काम 10 और फिर भी, एक समूह है, जिसे अभी तक यहाँ फ़िट नहीं किया गया है। और यह बहुत दिलचस्प है। प्रेरितों के काम 19 में, एक और समूह है। प्रेरितों के काम 19 में पॉल की तीसरी मिशनरी यात्रा है। तीसरी मिशनरी यात्रा पर, पॉल इफिसुस में तीन साल बिताता है, इसलिए यह याद रखना आसान है: तीसरी मिशनरी यात्रा, इफिसुस में तीन साल। तो पॉल 3MJ पर, वह सीधा वहाँ जाता है, और वह इफिसुस में रहता है, टायरानस के स्कूल में पढ़ाता है। तो वह वहाँ तीन साल तक पढ़ाता है। जब वह पहली बार वहाँ पहुँचा तो उसकी मुलाकात इन लोगों से हुई। प्रेरितों के काम 19:2 में कहा गया है, "उसने उनसे पूछा, 'क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा प्राप्त किया था?'" और उसने इन लोगों से पूछा, "ठीक है, तुम विश्वासी हो पॉल ने कहा, "अच्छा, तो फिर, तुम किसका बपतिस्मा ले रहे हो?" उन्होंने जवाब दिया, "हम जॉन के बपतिस्मा में बपतिस्मा ले रहे हैं।" तो इफिसुस के ये लोग जाहिर तौर पर जॉन बैपटिस्ट को जानते थे और संभवतः जॉर्डन नदी में जॉन बैपटिस्ट द्वारा बपतिस्मा लिया गया था। वे इज़राइल आए थे, जॉन बैपटिस्ट से मिले थे, जॉन बैपटिस्ट के अधीन धर्मांतरित हुए थे, लेकिन वे यीशु के बारे में नहीं जानते थे। वे वापस चले गए। आप जानते हैं कि ऐसा नहीं था - वे इंटरनेट पर जाकर

Google पर यीशु को नहीं खोज सकते थे और कह सकते थे, "हे यीशु, वह मसीहा जिस पर हम विश्वास करते हैं। उसे अभी-अभी सूली पर चढ़ाया गया था।" वे यह नहीं जानते थे। उस समय संचार इंटरनेट की तरह नहीं था, दुनिया भर में तुरंत पहुँच। इसलिए वे वापस चले गए। वे जॉन बैपटिस्ट को जानते थे। उन्होंने विश्वास किया, उन्होंने जॉन की आवश्यकता के अनुसार अपने पापों का पश्चाताप किया और बपतिस्मा लिया। वे वापस चले गए, वे यीशु के बारे में नहीं जानते थे। इसलिए पॉल ने उन्हें बताया, यीशु, उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ। फिर पॉल ने उन पर अपने हाथ रखे। याद है पीटर और जॉन ने सामरियों पर अपने हाथ रखे थे? पॉल ने उन पर हाथ रखा और पवित्र आत्मा उन पर उतरा और यह क्या संकेत था कि उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ था? वे अन्य भाषाओं में बोलते थे। फिर से, मेरा अनुमान है कि संभवतः ग्रीक और रोमन लोग संभवतः कुछ भाषा बोलते थे, फिर पॉल अरामी या हिब्रू या कुछ ऐसा ही जानता था। फिर वह पहचानता है कि यह एक ही बात है। पवित्र आत्मा उन पर उतरता है और वे अन्य भाषाओं में बोलते हैं। ये जॉन बैपटिस्ट के कुछ विश्वासी थे जो बचे हुए थे जो यीशु के बारे में नहीं जानते थे। वे विश्वासी थे लेकिन वे नहीं जानते थे, आप जानते हैं कि मसीह मर गया और फिर से जी उठा, उन्होंने बस नहीं सुना था।

जे. द सिट्ज़ मैं हूँ कोरिथ शहर में

लेबेन [30:17-31:00] डी: जो; 30:17-52:22; कुरिन्थियों में अन्यभाषाएँ को मिलाएँ

तो अब आपको चर्च में यहूदी मिल गए, सामरी लोग जुड़ गए, गैर-यहूदी जुड़ गए, और अब प्रेरितों के काम 19 में आपको कुछ पुराने जॉन बैपटिस्ट शिष्य मिल गए हैं। जब वे जुड़ गए तो उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हुआ और वे अन्य भाषाओं में बोलने लगे। ये विदेशी भाषाएँ थीं जिन्हें वे समझ सकते थे, इसलिए प्रेरितों के काम 2 प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक के लिए आदर्श है। दूसरे शब्दों में, ये सभी लोग एक ही काम कर रहे हैं। अगर यह अलग होता तो ल्यूक को कहना पड़ता, "ठीक है, उन्होंने अन्य भाषाओं का इस्तेमाल किया लेकिन यह वास्तव में वही भाषाएँ नहीं थीं जो हमने की थीं। अब वे सभी एक ही चीज़ थे, और प्रेरितों के काम 2 में भाषाओं की सूची दी गई है और इसलिए "उन्हें भी हमारी तरह ही

आत्मा प्राप्त हुई” - एक तरह का विचार। तो प्रेरितों के काम की पुस्तक में विदेशी भाषाएँ हैं जिनमें वे बोल रहे हैं।

क. 1 कुरिन्थियों में अन्यभाषा में बोलना [31:00-36:56]

तब लोग कहते हैं, "कुरिन्थियों की पुस्तक के बारे में क्या, क्योंकि ऐसा लगता है कि कुरिन्थियों में एक अलग प्रकार की भाषाओं का वर्णन किया गया है।" और यह 1 कुरिन्थियों 14 से है और इसलिए यह *सिटज़ का वर्णन कर रहा है मैं हूँ लेबेन* [जीवन में स्थिति] बहुत बार धर्मशास्त्री जब भी कुछ कहना चाहते हैं तो वे इसे जर्मन में कहते हैं और यह उसमें वजन जोड़ता है, इसकी गंभीरता, लेकिन *sitz मैं हूँ लेबेन* का मतलब है “जीवन में स्थिति।” वे इसे *सिटज़ कहते थे मैं हूँ लेबेन*। लेकिन आप में से कुछ लोगों ने पुराने नियम के पाठ्यक्रम लिए हैं और उन्होंने महसूस किया है कि कई भजन, भजनों की विभिन्न शैलियाँ अलग-अलग *स्थानों से आती हैं मैं हूँ लेबेन* और इसलिए भजन संहिता की पुस्तक में आपको भजन संहिता की प्रत्येक शैली जीवन की एक अलग स्थिति से आती हुई मिलेगी। कोरिंथ में जीवन की स्थिति कैसी थी? इस समय कोरिंथ कैसा था? हम इस कदम के बारे में तब बात करेंगे जब हम कोरिंथियन की पुस्तक के बारे में बात करेंगे, लेकिन कोरिंथ नाविकों का शहर था। मूल रूप से आपके पास दुनिया भर से नाविक थे और वे निचले ग्रीस में पेलोपोन्नी के आसपास नौकायन नहीं करना चाहते थे। आप केवल सात मील ज़मीन पर जाकर दो सौ मील की दूरी तय कर सकते थे। आज उनके पास एक नहर है जो वहाँ से होकर गुजरती है जिसे कोरिंथियन नहर कहा जाता है। उन्होंने वहाँ से एक नहर बनाई। लेकिन यह ठोस चट्टान के माध्यम से है और इसे बनाना कठिन था। लेकिन उन दिनों, वे वास्तव में नावों को ऊपर खींचते थे। और अगर वे छोटी नावें थीं और उन्हें बस इस सड़क पर खींचकर दूसरी तरफ़ उतार दिया जाता था। फिर वे तुर्की चले जाते थे। इसलिए, रोम से आने वाला आपका कोई भी सामान घूमकर कोरिंथ की खाड़ी में आता था और फिर ले जाया जाता था। बड़ी नावों के लिए उनके पास एक नाव से दूसरी तरफ़ सामान ले जाने के लिए दास होते थे, जो सात मील की दूरी तय करते थे, लेकिन इससे उन्हें पेलोपोन्नी के चारों ओर नौकायन करने से

बचत होती थी। वे इसे कम करने में सक्षम थे, और इसलिए यह समय बचाने का एक अच्छा तरीका है। लेकिन परिणामस्वरूप, कुरिन्थ एक नाविक शहर था। यह वास्तव में बहुत सारे रोमन सैनिकों द्वारा भी आबाद था। और आप देख सकते हैं कि इसमें दुनिया भर से लोग थे।

दुनिया भर से लोग वहाँ गए और इसलिए यहाँ पॉल ने क्या कहा। यह 1 कुरिन्थियों 14:2 है पॉल कहता है, "क्योंकि जो कोई अन्यभाषा में बोलता है, वह मनुष्यों से नहीं, बल्कि परमेश्वर से बात करता है।" तो इससे, लोग यह समझते हैं कि 1 कुरिन्थियों 14 की अन्यभाषाएँ एक अलग प्रकार की भाषाएँ थीं। अर्थात्, यह एक प्रार्थना भाषा थी। जबकि, प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लोगों ने वास्तव में समझा कि क्या कहा जा रहा था क्योंकि उन्होंने उन्हें अपनी भाषा में बोलते हुए सुना था। चार अंश: प्रेरितों के काम 2, 8, 10, और 19; ये सभी उन भाषाओं को संदर्भित करते हैं जिन्हें लोग समझते थे।

लेकिन 1 कुरिन्थियों 14 में पौलुस कुछ अलग तरीके से बात कर रहा है। क्योंकि जो कोई अन्यभाषा में बोलता है, वह मनुष्यों से नहीं, बल्कि परमेश्वर से बात करता है। वास्तव में कोई भी उसे नहीं समझता, वह अपनी आत्मा से रहस्यपूर्ण बातें कहता है। "लेकिन हर कोई जो भविष्यवाणी करता है," अब एक विरोधाभास है। पौलुस कहता है, एक आदमी अन्यभाषा में बोलता है; "कोई भी नहीं समझता कि वह क्या कह रहा है। वह आत्मा के साथ रहस्यपूर्ण बातें कहता है लेकिन कोई भी उन्हें नहीं समझ सकता। लेकिन हर कोई जो भविष्यवाणी करता है, वह लोगों को उनकी मजबूती, प्रोत्साहन और सांत्वना के लिए बोलता है। जो अन्यभाषा में बोलता है, वह खुद को संवारता है, लेकिन जो भविष्यवाणी करता है (उपदेश देता है) वह जो उपदेश देता है या जो भविष्यवाणी करता है वह चर्च को संवारता है।" इसलिए पौलुस यहाँ एक ऐसे व्यक्ति के बीच अंतर कर रहा है जो अन्यभाषा में प्रार्थना करता है और कोई भी उसे नहीं समझता है बनाम एक ऐसा व्यक्ति जो उपदेश देता है जो वास्तव में पूरे चर्च को लाभ पहुँचाता है क्योंकि चर्च समझ सकता है कि वह व्यक्ति क्या कह रहा है।

अब क्या ये वही भाषाएँ हैं जो प्रेरितों के काम की किताबों में हैं? और मैं आपको यह सुझाव देना चाहता हूँ कि प्रेरितों के काम और 1 कुरिन्थियों 14 में भाषाएँ थोड़ी अलग हैं।

मुझे अध्याय 14:14 पढ़ने दें। इसमें लिखा है, "क्योंकि यदि मैं अन्यभाषा में प्रार्थना करूँ," यह फिर से पॉल है, "यदि मैं अन्यभाषा में प्रार्थना करूँ तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, लेकिन मेरा मन निष्फल रहता है। तो मैं क्या करूँ? इसलिए मैं अपने मन से प्रार्थना करता हूँ।" और फिर 1 कुरिन्थियों 14:19 में पॉल कहते हैं, "मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि मैं तुम सब से ज़्यादा अन्यभाषा में बोलता हूँ, लेकिन चर्च में मैं दूसरों को निर्देश देने के लिए पाँच समझ में आने वाली बातें कहना ज़्यादा पसंद करूँगा बजाय अन्यभाषा में दस हज़ार शब्द बोलने के।" इसलिए पॉल कहते हैं, "तुम अन्य भाषाओं में बात करना चाहते हो, मैं तुम सब से ज़्यादा अन्य भाषाओं में बोल सकता हूँ, लेकिन कोई भी मेरी बात नहीं समझ पाएगा। मैं पाँच शब्द बोलना पसंद करूँगा जो समझ में आ जाएँ बजाय दस हज़ार शब्द बोलने के जिन्हें कोई नहीं समझ सकता। मैं यही कह रहा हूँ। मैं चर्च का निर्माण करना चाहता हूँ, यही मुद्दा है, सिर्फ़ खुद को शिक्षित करना नहीं।" तो, मैं यहाँ क्या सुझाव दे रहा हूँ और फिर मैं नीचे आता हूँ।

हमने भविष्यवाणी और अन्य भाषाओं के बारे में बात की, और पौलुस की भविष्यवाणी या अन्य भाषाओं में उपदेश देने के बीच विरोधाभास के बारे में। इस बिंदु पर मैं जो करना चाहता हूँ, वह आपको एक परिदृश्य देना है जो मुझे लगता है कि चल रहा था। मुझे लगता है कि कुरिन्थियों में अन्य भाषाएँ अलग हैं। मुझे लगता है कि यह इस बात से संबंधित नहीं है कि जब आत्मा उन पर आती है और वे अन्य भाषाओं में बोलते हैं। नहीं, वह कह रहा है, इस भाषा में परमेश्वर से प्रार्थना करने की तुलना में भविष्यवाणी करना या उपदेश देना बेहतर है, क्योंकि आप इस भाषा में परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं और कोई भी आपको नहीं समझता है। प्रश्न: प्रेरितों के काम 2 में क्या लोगों ने उसे अपनी मूल भाषा में समझा? इसलिए मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह अलग है।

एल. अपनी मूल भाषा में स्विच करना [36:56-39:35]

अब, मैं जो सुझाव दूँगा वह यह है कि क्या हो रहा है। मैं आपको अपने जीवन का उदाहरण देता हूँ। मैं अपनी पत्नी और कुछ दोस्तों, पेरी और एलेन फिलिप्स के साथ एक

साल के लिए यरूशलेम में रहा, और जब हम बेथलेहम के नीचे इस *बाराकाह* चर्च में गए। यह एक अरब चर्च था और इसलिए हमने उदाहरण के लिए गाना सीखा " *en तहाबीबी*" और हमने अरबी में "जीसस इज माई फ्रेंड" के कुछ गाने सीखे। मैं अरबी में पारंगत नहीं था, लेकिन मैं इसे नकली तरीके से बोलना जानता था, आप जानते हैं, " माहा शालमी " और इस तरह के मुहावरे। मैं अरबी में "धन्यवाद" जैसी महत्वपूर्ण बातें कहना जानता था। यह एक अरब चर्च था। अब, मान लीजिए कि मैंने थोड़ी अरबी सीख ली है, और मैं अरबी में भगवान से प्रार्थना कर रहा हूँ, लेकिन अरबी मेरी मातृभाषा नहीं है, और इसलिए मैं कुछ चीज़ों को नकली तरीके से बोल सकता हूँ और मैं जो कह रहा हूँ उसे कुछ हद तक समझ सकता हूँ, लेकिन मान लीजिए कि प्रार्थना बहुत तीव्र हो जाती है। तो, मैं अरबी में प्रार्थना कर रहा हूँ, लेकिन सवाल: जब मैं अरबी में प्रार्थना कर रहा हूँ, तो क्या मुझे अपने द्वारा कहे जा रहे हर शब्द के बारे में सोचना पड़ता है? क्योंकि मैं अरबी में पारंगत नहीं हूँ और इसलिए मुझे हर चीज़ पर दोबारा सोचना पड़ता है। मैं धाराप्रवाह प्रार्थना नहीं कर सकता, इसलिए मुझे इसके बारे में सोचना पड़ता है। लेकिन क्या होगा अगर, अचानक, मैं अरबी में हर शब्द के बारे में सोचना बंद कर दूँ और मैं सिर्फ भगवान से प्रार्थना करना शुरू कर दूँ? क्या यह सच है? क्या यह बहुत संभव है कि मैं अरबी से वापस अंग्रेजी में आ जाऊँ और अंग्रेजी में भगवान से प्रार्थना करना शुरू कर दूँ? हाँ। क्योंकि अंग्रेजी मेरी मातृभाषा है, जब मैं वास्तव में भगवान से प्रार्थना करने के बारे में सोचना शुरू करता हूँ, तो मैं अंग्रेजी में प्रार्थना करता हूँ। तब मैं धाराप्रवाह हो सकता हूँ और मैं खुद को व्यक्त कर सकता हूँ, जबकि, जब मैं अरबी में प्रार्थना कर रहा हूँ, तो यह अटपटा है और मुझे इस बारे में सोचना पड़ता है कि मैं क्या कह रहा हूँ।

तो मैं जो सुझाव दे रहा हूँ वह यह है कि यह बहुत संभव है कि ये लोग दुनिया भर से आए नाविक हों। वे रोमन सैनिक हैं, और दुनिया भर से आए अन्य लोग हैं और जो हुआ वह यह कि वे प्रार्थना करते होंगे। और वे ग्रीक में प्रार्थना करते होंगे क्योंकि हर कोई ग्रीक जानता था। लेकिन जैसे ही वे अपनी प्रार्थना में लग जाते हैं, और वे वास्तव में भगवान से प्रार्थना करना शुरू कर देते हैं, वे अपनी मूल भाषा में वापस आ जाते हैं। फिर जब वे अपनी

मूल भाषा में वापस आते हैं, तो कमरे में कोई भी नहीं समझ पाता कि वे क्या कह रहे हैं। और इसलिए पॉल कहते हैं, "अरे, ऐसा मत करो-- मैं दस हजार शब्दों की तुलना में पाँच शब्द कहना पसंद करूँगा जो समझ में आते हों, जिन्हें कोई नहीं समझता। जहाँ हर कोई समझ सके वहाँ प्रचार करना बेहतर है बजाय किसी अन्य भाषा में प्रार्थना करने के, क्योंकि जब आप अपनी मूल भाषा में वापस आते हैं, और आप अपनी मूल भाषा में प्रार्थना करना शुरू करते हैं, तो हाँ आप भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं, लेकिन कोई भी नहीं समझता कि आप क्या कर रहे हैं और इसलिए यह चर्च को शिक्षित या विकसित नहीं करता है।" इसलिए मुझे लगता है कि कोरिंथ में यही हो रहा है, हाँ, यह एक प्रार्थना भाषा है। लेकिन पॉल का कहना है कि पूरी प्रार्थना भाषा लोगों को लाभ नहीं पहुँचाती है और मुझे लगता है कि वे अपनी मूल भाषा में प्रार्थना कर रहे हैं और जब वे उस भाषा में वापस आते हैं, तो कोई भी इसे नहीं समझता है।

एम. अन्यभाषा में बोलने के लिए तीन दिशा-निर्देश [39:35-42:06]

और वैसे, यहाँ यह दिलचस्प है। तीन दिशा-निर्देश दिए गए हैं और मुझे लगता है कि जैसा कि आप 1 कुरिन्थियों 14:28 में पढ़ते हैं। मुझे बस इसे पढ़ने दें। ये पौलुस द्वारा शास्त्रों में दिए गए दिशा-निर्देश हैं। यदि आप इस तरह से अन्यभाषा में बोलने जा रहे हैं, तो यहाँ तीन दिशा-निर्देश दिए गए हैं जिनका आपको पालन करना चाहिए। मैं आपसे पूछता हूँ - और मैं कई स्थितियों में रहा हूँ जहाँ लोग अन्यभाषा में बोल रहे थे, मेरा सवाल है, क्या उन्होंने इन तीन दिशा-निर्देशों का पालन किया? ये प्रेरित पौलुस द्वारा निर्धारित तीन दिशा-निर्देश हैं। क्या उन्होंने इन दिशा-निर्देशों का पालन किया? यदि कोई अन्यभाषा में बोलता है, तो दो या, अधिक से अधिक, तीन लोगों को बोलना चाहिए।" मैं ऐसे समूहों में रहा हूँ जहाँ दो या तीन नहीं, बल्कि बहुत से लोग अन्य भाषाएँ बोलते हैं। पॉल कहते हैं, अगर कोई व्यक्ति अन्य भाषाएँ बोलता है, तो दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन लोगों को बोलना चाहिए। तो पहला नियम है: दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन। आपके पास एक बैठक है, चर्च की बैठक है, दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन लोगों को अन्य भाषाएँ बोलनी चाहिए। एक समय में एक दूसरा नियम

है - दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन, एक समय में एक। मैं कितनी बार ऐसी सेवा में गया हूँ जहाँ मूल रूप से आपके पास कई लोग थे, वास्तव में कई से ज़्यादा, सभी एक ही समय में अन्य भाषाएँ बोलते हुए। पॉल कहते हैं नहीं, दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन, और उन्हें एक समय में एक होना चाहिए।

तीसरी योग्यता यह है कि पॉल कहते हैं कि किसी को व्याख्या करनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति अन्य भाषाओं में बोल रहा है, वह भगवान से प्रार्थना कर रहा है, कोई भी नहीं समझता कि वह क्या कह रहा है। किसी को इसका अर्थ निकालना होगा। और फिर, मैं कई समूहों में रहा हूँ जहाँ वे अन्य भाषाओं में बोल रहे हैं और कोई भी कुछ भी व्याख्या नहीं करता है। कोई भी व्याख्या नहीं करता है, और इसलिए ये तीन दिशा-निर्देश हैं और वैसे, ये तीन दिशा-निर्देश पवित्रशास्त्र से हैं: दो या अधिकतम तीन; एक समय में एक; और किसी को चर्च के निर्माण के लिए व्याख्या करनी चाहिए। इसलिए मुझे लगता है कि तब पूछना महत्वपूर्ण है, तो यह 1 कुरिन्थियों 14 है: एक समय में एक; दो या अधिकतम तीन; और फिर एक व्याख्या होनी चाहिए। किसी को चर्च को यह समझाना चाहिए कि आपने अभी प्रार्थना में क्या कहा।

एन. ईश्वर की भाषा [42:06-47:47]

अब मेरे लिए, यह एक अधिक अमूर्त तर्क है, लेकिन मेरे लिए यह एक शक्तिशाली तर्क है। आपको पूछना होगा, भगवान की भाषा का उपयोग क्या है? आप में से कुछ ने मुझे पुराने नियम और नए नियम के लिए चुना, और मेरे लिए एक बड़ा सिद्धांत, वास्तव में मेरे जीवन में, और वास्तव में मेरे जीवन में मेरे आह्वानों में से एक, और वास्तव में मैं इस डिजिटल वीडियो ऑनलाइन सामान के साथ अभी क्या कर रहा हूँ, वह यह है कि भगवान हमेशा एक ही भाषा बोलते हैं, भगवान हमेशा एक ही भाषा बोलते हैं। अब अगर आपने मुझे पुराने नियम के लिए चुना है, तो आप जानते हैं कि भाषा हिब्रू है क्योंकि एडम का नाम "एडम" था। एडम का मतलब है "आदमी," या "धूल।" आप कह रहे हैं कि उसका नाम "धूल" था। लेकिन एडम का नाम एक हिब्रू नाम था। इसलिए अगर एडम का नाम एक हिब्रू

नाम था, भगवान ने उसका नाम रखा, तो हिब्रू स्वर्ग की भाषा होनी चाहिए, और भगवान हिब्रू बोलते हैं। वैसे, भगवान हिब्रू बोलते हैं, पुराने नियम में कहा गया है " यहोवा कहता है , कोल अमर YHWH और इसलिए भगवान पुराने नियम में भविष्यद्वक्ताओं से हिब्रू में बात करते हैं। तो हिब्रू भगवान की भाषा है, लेकिन आप जानते हैं कि समस्या क्या है? क्या एडम का नाम वास्तव में एडम था? और जैसा कि हमने पुराने नियम में समझाया है, नहीं, उस समय हिब्रू मौजूद नहीं थी। हिब्रू कनान देश की एक बोली है। यह एक कनानी बोली है जो लगभग 1800 ईसा पूर्व विकसित हुई थी। हम जानते हैं कि कनानी भाषा का विकास सुमेरियन जैसी अन्य सभी भाषाओं की तरह नहीं है, और अन्य जो बहुत पुरानी हैं। कनानी भाषा का विकास लगभग 2000-1800 ईसा पूर्व हुआ। वह हिब्रू है। हिब्रू कनानी बोली है। हिब्रू कनान की बोली है जब अब्राहम कनान देश में चले गए तो उन्होंने कनानी भाषा बोलना शुरू कर दिया और यही भाषा हिब्रू के रूप में आई। ठीक है, तो मैं कह रहा हूँ कि भगवान, भगवान ने अब्राहम और अन्य लोगों से हिब्रू क्यों बोली? क्योंकि यह उनकी भाषा थी, और परमेश्वर भी वही भाषा बोलता है।

तो अब क्या हुआ जब यहूदी बेबीलोन गए, उन्हें ले जाया गया, मंदिर को नष्ट कर दिया गया, 586 ईसा पूर्व में, और नबूकदनेस्सर ने दानिय्येल, शद्रक, मेशक और अबेदनगो को ले लिया। यहजेकेल, सिदकिय्याह, और उन्हें बेबीलोन ले गए ? वे सत्तर साल या उससे अधिक समय तक बेबीलोन में रहे, और फिर क्या हुआ कि उन्होंने अरामी भाषा सीख ली। अरामी वह भाषा थी जिसका इस्तेमाल उस समय लगभग 586 ईसा पूर्व में किया जाता था, और वे अरामी बोलते थे। इसलिए उन्होंने हिब्रू से अरामी भाषा अपना ली। अब ये दो भाषाएँ स्पेनिश और पुर्तगाली जैसी हैं, वे बहन भाषाएँ हैं, जो इससे बहुत निकटता से जुड़ी हुई हैं, लेकिन फिर भी वे अरामी भाषा में बदल गईं। जब वे अरामी भाषा में बदल गए, तो परमेश्वर ने क्या किया? परमेश्वर ने अरामी भाषा अपना ली और इसलिए एस्तेर की पुस्तक और कई अन्य भाग अरामी भाषा में लिखे गए हैं, और कई पुस्तकों के अरामी भाग हैं जो बाद की पुस्तकें हैं जिन्हें बेबीलोन के निर्वासन के बाद जोड़ा गया था।

फिर क्या होता है, जैसा कि हम न्यू टेस्टामेंट क्लास से जानते हैं, 333 ईसा पूर्व, 333

ईसा पूर्व में क्या हुआ? सिकंदर महान आगे आता है और दुनिया को जीतता है, और एक "आम भाषा" फैलाता है, जिसे उसने मूल रूप से इसलिए अपनाया और विकसित किया ताकि उसके सभी सैनिक एक ही भाषा बोल सकें। वे जहाँ भी गए, उन्होंने कोइन ग्रीक, कॉमन ग्रीक नामक इस भाषा का प्रसार किया। यह साझा थी, यह एथेंस के एटिक की तरह द्वंद्वत्मक ग्रीक नहीं थी और ग्रीस के विभिन्न शहरों की अपनी अनूठी बोलियाँ थीं। सिकंदर कहता है, "मैं ऐसा नहीं कर सकता, तुम मेरी सेना में हो, सभी को एक ही भाषा बोलनी होगी।" तो मूल रूप से ग्रीक को कोइन में बदल दिया गया जिसे कॉमन ग्रीक कहा जाता है। कोइन ग्रीक लगभग 300 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी तक चला, इसलिए यह लगभग 600 साल की अवधि है कोइन ग्रीक और फिर लगभग 300 ईस्वी के बाद यह बीजान्टिन ग्रीक में बदल गया, और अब हमारे पास आधुनिक ग्रीक है, जो काफी अलग है, समान लेकिन अलग है। न्यू टेस्टामेंट किस भाषा में लिखा गया था?

खैर, भगवान ने अब्राहम से हिब्रू भाषा में बात की, और एस्तेर के माध्यम से अरामी भाषा में, और फिर अब नए नियम में यहूदियों ने ग्रीक भाषा में बात की और चर्च ग्रीक भाषा का उपयोग करता है। अंदाज़ा लगाइए कि नया नियम किस भाषा में लिखा गया है? कोइन ग्रीक। भगवान कौन सी भाषा बोलते हैं? वह हमेशा बिल्कुल वही भाषा बोलते हैं: वह लोगों की भाषा बोलते हैं। वे जो भी भाषा बोलते हैं, वह बोलते हैं, भगवान सब कुछ जानते हैं, वह सर्वज्ञ हैं, वह हिब्रू, अरामी और ग्रीक में पारंगत हैं। वैसे मुझे लगता है कि वह लैटिन भी बोल सकते हैं, उन्होंने चर्च में 1000 सालों तक ऐसा किया, मुझे लगता है कि वह अंग्रेजी, चीनी, कोरियाई और भारत की विभिन्न बोलियाँ, स्पेनिश, पुर्तगाली बोल सकते हैं, वह ये सब बोल सकते हैं। तो, भगवान हमेशा लोगों की भाषा बोलते हैं, और मुझे लगता है कि यह वास्तव में एक महत्वपूर्ण बात है, कि भगवान लोगों की भाषा बोलते हैं क्योंकि वह उनसे बात करते हैं जिन्हें वह संबोधित कर रहे हैं। तो, वह यह रहस्यमयी भाषा नहीं बोलते हैं जिसे कोई नहीं समझता, कोई भी भगवान ऐसी भाषा में नहीं बोलते हैं जिसे लोग समझते हों। ईश्वर एक रहस्योद्घाटन करने वाला ईश्वर है, वह खुद को प्रकट करता है और जब वह खुद को प्रकट करता है तो वह ऐसी भाषा में बोलता है जिसे लोग समझ सकते हैं। मूसा, जब ईश्वर ने निर्गमन

3:14 में कहा, "मैं वही हूँ जो मैं हूँ", तो मूसा ने कहा, "हाँ, मैं समझता हूँ कि YHWH का क्या मतलब है। यह क्रिया *हयाह से है* और वह इसे जानता है। तो, यहाँ एक और बात भी है, इसलिए मेरा सुझाव है कि ईश्वर उन भाषाओं में जाने के बजाय जिन्हें समूह में कोई नहीं समझता है, ईश्वर उस भाषा में संवाद करता है जिसे समूह समझता है, यही उसका पैटर्न है, यह शास्त्र में 2000 से अधिक वर्षों से उसका पैटर्न रहा है।

ओ. भाषाविज्ञान विश्लेषण भाषा बोलना [47:47-52:22]

अब, भाषाओं का भाषाई विश्लेषण, समरन नाम का एक व्यक्ति है जिसने भाषाओं का कुछ भाषाई विश्लेषण किया, और उसने मूल रूप से भाषाओं में बोलने की प्रक्रिया को टेप किया, मुझे नहीं पता कि यह लगभग पाँच साल की बात है, उसके पास इसके कई टेप और ऐसी ही चीज़ें थीं। भाषाओं के इस तरह के भाषाई विश्लेषण में उसने जो पाया, ये भाषाविद् ऐसे लोग हैं जो इंडोनेशिया जैसे आदिवासी समूह में जा सकते हैं, और बैठ सकते हैं और आदिवासी व्यक्ति कह सकता है, "बुगा, बुगा" और वे कहते हैं "बुगा बुगा" और बहुत जल्द ही वे इसके सभी ध्वन्यात्मकता का वर्णन करते हैं और ध्वनियों, विभिन्न स्वरों और अन्य प्रकार की चीज़ों का वर्णन करते हैं जो एक भाषा में हो सकती हैं, और फिर वे रूपिम बनाते हैं, अर्थ की छोटी-छोटी चीज़ें और आप कैसे बहुवचन बनाते हैं, आप इसे एकवचन कैसे बनाते हैं, आप कैसे कहते हैं "मैं", आप कैसे कहते हैं "आप", आप कैसे कहते हैं "वे।" क्या उनके पास पहले, दूसरे और तीसरे व्यक्ति की "मैं, तुम, वह, वह, यह" प्रणाली भी है। या वे कुछ अलग उपयोग करते हैं? और इसलिए भाषाविदों को इसके साथ प्रशिक्षित किया जाता है ताकि वे पृथ्वी पर लगभग किसी भी भाषा को डिकोड कर सकें।

मैं आपको विक्लिफ़ बाइबल ट्रांसलेटर द्वारा संचालित समर इंस्टीट्यूट ऑफ़ लिंग्विस्टिक्स, SIL के कुछ लोगों की अत्यधिक अनुशंसा करना चाहता हूँ। विक्लिफ़ बाइबल ट्रांसलेटर पूरी दुनिया में जाकर बाइबल का अनुवाद इन सभी आदिवासी भाषाओं में करने की कोशिश कर रहे हैं, धरती पर मौजूद हर भाषा में और इसलिए वे अपने लोगों को भाषा विज्ञान में प्रशिक्षित करते हैं ताकि वे एक जनजाति में जाएँ जहाँ इन लोगों को भाषा के बारे में

कुछ भी पता न हो और वे कुछ समय के लिए लोगों के साथ रहते हैं और एक या दो साल, तीन या यहाँ तक कि 25 या 30 साल के बाद, वे मूल रूप से भाषा को डिकोड करते हैं और वास्तव में भाषा को लिखते हैं। इनमें से कई आदिवासी समूहों की भाषा वास्तव में कभी लिखी नहीं गई है, यह केवल मौखिक रही है। ये विक्लिफ़ बाइबल ट्रांसलेटर इसे लिखेंगे और शास्त्रों को विकसित करेंगे और शास्त्रों का उनकी भाषा में अनुवाद करेंगे। तो यह अविश्वसनीय है, इसलिए ये भाषाविद् भाषाओं के साथ वास्तव में अच्छे हैं, यही मैं कहने की कोशिश कर रहा हूँ।

तो, मूल रूप से वे जीभ से बोलने को लेते हैं, और समरन जो वर्णन करता है वह यह है कि जीभ से बोलना शैतान का काम नहीं है। वह कहता है कि इसके अलावा यह एक सीखा हुआ व्यवहार है, और वह इसे किससे जोड़ता है...क्या आप लोग दर्शनशास्त्र करते हैं? दर्शनशास्त्र में आपको फ्रेडरिक नीत्शे मिलते हैं, और वह कहते हैं, "होने से पहले करना", दूसरी ओर, इमैनुअल कांट कहते हैं, "करने से पहले होना" और फ्रैंक सिनात्रा कहते हैं, "डू बी डू बी डू।" अब "डू बी डू बी डू" का क्या मतलब है? जब फ्रैंक सिनात्रा एक गाना गाते हैं और वह "डू बी डू बी डू" कहते हैं, तो इसका क्या मतलब होता है? क्या आप "डी" ध्वनि की पुनरावृत्ति सुन सकते हैं? आप ध्वनि की पुनरावृत्ति सुन सकते हैं, आप इसकी लय सुन सकते हैं। "डू बी डू बी डू" इसका क्या मतलब है? और आप कहते हैं, इसका वास्तव में कोई मतलब नहीं है, वह बस इधर-उधर उछल रहा है।

असल में, आप में से कई लोग बेबी टॉक के नाम से जाने जाने वाले कामों में यही करते हैं। आप में से कितने लोग कभी किसी बच्चे के पास गए हैं और आपने बच्चे के चेहरे को खरोंचा है और आप "ऊची" कहते हैं कूची कू," तो इसका क्या मतलब है? क्या आप दोहराव सुन सकते हैं? और बच्चा कहता है, "अरे, यार मुझे ऐसे मत छुओ मैं यह नहीं समझ सकता।" यही बच्चा कहता है, बच्चा समझ नहीं सकता इसलिए आप "ऊची" कहते हैं कूची कू", बच्चा यह भी नहीं समझ पाता, इसलिए बच्चा कहता है "मुझसे अंग्रेजी में बात करो यार, मैं यह ऊची नहीं करता कूची कू सामान।" लेकिन मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि आप "ऊची कूची कू," इसका क्या मतलब है? आप स्वरों के साथ व्यंजन ध्वनियों की उच्च पुनरावृत्ति करते हैं और

आप इसका वर्णन कर सकते हैं। खैर, समरन का कहना है कि उसने जो जीभ से बोलना टेप किया था वह बहुत हद तक " ऊची" जैसा है कूची कू," तो यह एक सीखा हुआ व्यवहार है और एक व्यक्ति इसे खुद ही सीख सकता है / *आप संबाला* से शुरुआत कर सकते हैं *शिशबाला* और आप इस पर जा सकते हैं। इस पर रोल या ग्रूव में आ जाओ और चीजें और लोग ऐसा कर सकते हैं। मैं यह किसी को नीचा दिखाने या कुछ भी करने के लिए नहीं कह रहा हूँ, लेकिन यह एक भाषाविद् का विश्लेषण है और वह कहता है कि यह "डू बी डू बी डू" या " ऊची" जैसी ही बात है "कूची कू" बात.

अब मैं इस पर वापस आता हूँ, 1960 के दशक के अंत और 1970 के दशक की शुरुआत में जीभ के मुद्दे ने वास्तव में चर्च को विभाजित कर दिया था और आपके पास ऐसे बहुत से समूह थे जो करिश्माई समूहों और पुराने पारंपरिक पेंटेकोस्टल समूहों के रूप में आए, बीसवीं सदी की शुरुआत में 1900 के आसपास जीभ में बोलना शुरू हुआ, लोगों ने जीभ में बोलना शुरू कर दिया। कई पुराने पारंपरिक चर्चों ने वास्तव में बहुत से समूहों को रोक दिया, जिनके साथ मैं जुड़ा था, सेसेशनिस्ट, उन्होंने कहा कि भगवान ने अधिनियम 2 में जीभ बोलकर चमत्कार किए थे, लेकिन चमत्कार बंद हो गए हैं। इसलिए उन्हें सेसेशनिस्ट कहा जाता है, और जैसा कि वे कहेंगे, यह एक अलग व्यवस्था थी। अब भगवान वास्तव में ऐसा नहीं करते हैं।

पी . करिश्माई आंदोलन के लाभ [52:22-59:34]

ई.; कम्बाइन पी (केवल); 52:22-59:34; करिश्माई आंदोलन के लाभ

मुझे लगता है कि करिश्माई और पेंटेकोस्टल चर्चों से निकलने वाली महान चीजों में से एक यह है कि वे अपने साथ जुनून की भावना लेकर आए हैं और मुझे लगता है कि स्पष्ट रूप से कुछ पुराने और अधिक स्थिर चर्च वास्तव में उन गीतों की जुनून की भावना से समृद्ध हुए हैं जो भगवान की स्तुति करते हैं और वास्तव में भगवान की स्तुति और पूजा की भावना है और

जहां लोग खुद को इसमें झोंक देते हैं और इस तरह की घटनाएं घटित होती हैं।

जब मैंने पहली बार पढ़ाना शुरू किया, तो मैंने ब्रिस्टल, टेनेसी में ग्राहम बाइबल कॉलेज नामक जगह पर पढ़ाया, मेरे पहले स्नातक वर्ग में से एक की उम्र शायद 20 साल थी, जब मैंने पढ़ाना शुरू किया, उस समय 24-25 साल के थे, और इस बाइबल कॉलेज में, मैंने जिन लोगों को पढ़ाया उनमें से एक रेव. कुक थे, जो मुझसे उम्र में बहुत बड़े थे, शायद अब वे और उनकी पत्नी दोनों ही इस दुनिया में नहीं रहे होंगे। रेव. कुक स्नातक कर रहे थे, और वे एक पुराने पेंटेकोस्टल प्रचारक थे, और उस समय मुझे ब्रिस्टल, टेनेसी क्षेत्र में एक प्रेस्बिटेरियन चर्च में नियुक्त किया गया था। जब उन्होंने स्नातक किया तो उनकी पत्नी मेरे पास आई, और वे जानती थीं कि मैं अन्य भाषाओं में नहीं बोलता, लेकिन मैं वास्तव में रेव. कुक का सम्मान करता था। वे एक ईश्वरीय व्यक्ति थे, वे एक पेंटेकोस्टल प्रचारक थे और वे एक ईश्वरीय व्यक्ति थे, मैंने अपनी कक्षा में देखा कि वे किस तरह से पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते थे और किस तरह से पवित्रशास्त्र से प्यार करते थे। जिस तरह से वह भगवान से प्यार करते थे, वह वास्तव में स्पष्ट था और मैं उनका सम्मान करता था, भले ही वह मेरे छात्र थे, मैं उनका सम्मान करता था क्योंकि मैंने उनमें एक जीवंतता और ईश्वर के प्रति उनका जुनून देखा था जिसकी मैं प्रशंसा करता था। जब उन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त की, तो उनकी पत्नी मेरे पास आई, मूल रूप से उन्होंने मुझे एक बड़ा सा टेनेसीयन भालू गले लगाया, वह एक बड़ी महिला थीं और उन्होंने मुझे जमीन से उठाया। अब, ऐसा करना इतना आसान काम नहीं है, लेकिन इस महिला ने मुझे एक भालू गले लगाया और उसने मुझे जमीन से उठाया और उसने कहा, "हम आपके लिए प्रार्थना कर रहे हैं और आप आत्मा प्राप्त करने के बहुत करीब हैं।" उनके कहने का मतलब था कि मैं अन्य भाषाओं में बात करता हूँ, मैंने कभी ऐसा नहीं किया, लेकिन वैसे भी, अब सवाल यह है कि जब वह मुझे इस तरह हवा में उठाती हैं तो आप कहते हैं, हाँ मैडम, क्योंकि मेरा मतलब है कि आप वहाँ एक तरह से फंस गए हैं। क्या यह सबसे अच्छी बातों में से एक थी जो किसी ने कभी मुझसे कही है? जवाब है : हाँ। वे जो कह रहे हैं, वही मसीह हमारे पास है, और हम इतने भावुक हैं कि हम अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं और ये काम करते हैं, आपके पास भी वही मसीह है और आप इतने करीब हैं और हम

आपके करीब महसूस करते हैं; हम आपके साथ बंधे हुए महसूस करते हैं। पवित्र आत्मा ठीक यही करती है कि दो ऐसे लोगों को जोड़ती है जो हताश हैं, कई मायनों में अलग हैं लेकिन साथ हैं। तो यह सबसे अच्छी बातों में से एक थी जो किसी ने मुझसे कही है, और मैं बस इतना कह रहा हूँ कि इन संप्रदायगत भेदों के बारे में सावधान रहें। हम अब ऐसे युग में जी रहे हैं जिसमें एक निश्चित अर्थ में वे सभी विशिष्टताएँ धुल गई हैं और हम किसी भी ऐसी चीज़ से घृणा करते हैं जो हमें अलग करती है, और हालाँकि इसके साथ अन्य समस्याएँ भी हैं। करिश्माई और पेंटेकोस्टल लोगों के लिए पारंपरिक लोगों के लिए और इसके विपरीत बहुत अधिक सम्मान की आवश्यकता है, और मुझे उम्मीद है कि इस पूरी चर्चा के बाद यही स्वर होगा। हमारे बीच मतभेद रहे हैं और मैंने उन्हें बताया है कि मैं किस तरह से खड़ा हूँ, लेकिन जब बात आती है, तो इस साल इस क्लास में शामिल लोगों में से एक व्यक्ति पूरी तरह से पेंटेकोस्टल है और उसके बाद मैंने उससे जो बड़ी बात कही, वह यह थी कि मैं चाहता हूँ कि जब आप यहाँ से बाहर आएँ तो आपको सम्मान महसूस हो, मैं आपकी ईसाई धर्म के लिए आपका सम्मान करता हूँ और भाषा बोलने का यह मुद्दा हमें अलग नहीं करता। इसलिए, इस पर आपकी राय अलग हो सकती है, और हम करते हैं और यह ठीक है। मुझे लगता है कि मेरा काम अच्छे हिस्सों को लेना है और मुझे पेंटेकोस्टल के जुनून पसंद हैं, और सच कहूँ तो हममें से कुछ लोग जो उस पारंपरिक संदर्भ में हैं, उन्हें उस जुनून की और अधिक सख्त जरूरत है। इसलिए मतभेदों के साथ सम्मान।

ईसाई धर्म में कुछ ऐसी बातें हैं जिन पर आप लड़ते हैं, वे बड़ी बातें हैं, और वास्तव में मैं यह कहना चाहता हूँ, यह सबसे महत्वपूर्ण बातों में से एक है जो मैंने बाइबिल सेमिनरी से सीखी, "बड़ी बातों पर ध्यान दें, छोटी बातों पर ध्यान दें।" एक वास्तविक व्यक्ति को यह समझना होगा कि बड़ी बातें क्या हैं, जब कोई यह कहना शुरू करता है कि यीशु मसीह मृतकों में से नहीं उठे, या यह एक शारीरिक पुनरुत्थान नहीं था यह एक आध्यात्मिक पुनरुत्थान था और वे इस तरह से कहना शुरू कर देते हैं। वे बड़ी बातें हैं, आप सुसमाचार को नष्ट कर रहे हैं। आपको यह जानना होगा कि बड़ी बातें क्या हैं और आप बड़ी बातों पर ध्यान दें, और छोटी बातों पर ध्यान दें। अन्य भाषाओं के बोलने की बात वास्तव में एक छोटी सी समस्या है, और

यह कुछ इस तरह है कि क्या मसीह क्लेश से पहले, क्लेश के बीच में या क्लेश के बाद वापस आया या स्पष्ट रूप से सात साल का क्लेश होने वाला है? ये प्रश्न ऐसे हैं जैसे एक पिन के सिर पर कितने स्वर्गदूत नाच सकते हैं। बड़ी बातों पर ध्यान दें, छोटी बातों पर ध्यान दें। और जो होता है वह यह है कि लोग हमेशा आपको छोटी-छोटी बातों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करेंगे और आपको इतना समझदार होना होगा कि आप इसे समझ सकें और कह सकें कि यह एक छोटी सी बात है। वैसे, कुछ लोग अपनी पूरी ज़िंदगी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान केंद्रित करने, छोटी-छोटी बातों का बचाव करने और छोटी-छोटी बातों को साबित करने में बिता देंगे। मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि अपना जीवन ऐसे बर्बाद मत करो, उन चीज़ों का पता लगाओ जो वास्तव में महत्वपूर्ण हैं, पॉल के लिए वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है? वह कहता है, "भले ही मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाओं में बात करूँ, लेकिन वह क्या है? अगर मैंने प्रेम नहीं किया तो यह कुछ भी नहीं है।" प्रेम महत्वपूर्ण चीज़ है, महत्वपूर्ण चीज़ों पर ध्यान दें। दूसरे लोगों से प्रेम करना कितना मुश्किल है, नफरत करना आसान है, अलग होना और मतभेद होना आसान है लेकिन दूसरे व्यक्ति से प्रेम करना कितना मुश्किल है? और पॉल कहता है, बड़ी बातों पर ध्यान दें, यीशु ने क्या सिखाया? उसने अपने दोस्तों और अपने दुश्मनों के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया और जब हम अभी भी अपराधों और पापों में मरे हुए थे, तो उसने हमारे लिए खुद को दे दिया। इसलिए हमें मसीह के अनुयायी के रूप में दूसरों के लिए, यहाँ तक कि अपने शत्रुओं के लिए भी खुद को समर्पित कर देना चाहिए, इसलिए यह प्रेम का एक हिस्सा है। इसलिए प्रेम एक प्रमुख मुद्दा है, जाहिर है कि ईश्वर से प्रेम करना और अपने पड़ोसी से प्रेम करना।

प्रश्न: पॉल की मिशनरी यात्राएँ [59:34-61:09]

F: संयुक्त QX: 59:34-81:24; 1 पॉल की मिशनरी यात्रा

यह तुर्की [एशिया माइनर] का नक्शा है और हम इसे इसलिए उठा रहे हैं क्योंकि हम अब गियर बदल रहे हैं, कम से कम हम यहाँ प्रेरित पॉल की मिशनरी यात्राओं पर जा रहे हैं और यह पहली, दूसरी होने जा रही है, यह वास्तव में कठिन होने जा रही है। पॉल की पहली

मिशनरी यात्रा, पॉल की दूसरी मिशनरी यात्रा और पॉल की तीसरी मिशनरी यात्राएँ हैं और उनमें से बहुत सी तुर्की के इस क्षेत्र में होती हैं। तो तुर्की वह होगा जिसे वे एशिया माइनर कहते हैं। यह एशिया माइनर या तुर्की है और इज़राइल नक्शे से नीचे होगा और यहाँ ग्रीस है। तो आपके पास ग्रीस और मैसेडोनिया है। मैसेडोनिया ऊपर है और ग्रीस यहाँ नीचे है, और यह तुर्की है। क्या आपको याद है कि पॉल तरसुस से आया था? तरसुस वहीं है जहाँ तुर्की सीरिया से मिलता है। तरसुस बहुत दूर नहीं है, बस वहाँ से थोड़ा पश्चिम की ओर है। फिर पॉल अपनी मिशनरी यात्राओं पर यहाँ आने वाला है, यहाँ इफिसुस है, पॉल कुछ समय के लिए वहाँ रहने वाला है और कुरिन्थ जिसके बारे में हमने अभी बात की है। यहाँ कुरिन्थ है और हम अगले कुछ घंटों में प्रेरित पॉल की पहली, दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्राओं पर चर्चा करेंगे। यह सिर्फ एक नक्शा है। आप लोग पावरपॉइंट और अन्य चीज़ों में चले गए हैं, इसलिए इसे लिखने की कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि आप पावरपॉइंट से नक्शा खींच सकते हैं, लेकिन मुझे यह नक्शा बहुत पसंद है, यह इसकी एक सैटेलाइट इमेज की तरह है और मुझे लगता है कि यह एक अच्छा नक्शा है।

आर. पहली मिशनरी यात्रा: वॉक-थ्रू [61:09-65:45]

अब, यहाँ जो हो रहा है उसका एक योजनाबद्ध या कार्टून संस्करण है, और यह पहली मिशनरी यात्रा है। पहली मिशनरी यात्रा मूल रूप से 46 से 48 ईस्वी तक है, अब मैं नहीं चाहता कि आप तारीख जानें, मैं इस पाठ्यक्रम में तारीखों के साथ ज्यादा कुछ नहीं करता, यहाँ एक तारीख है जो मैं आपको बताना चाहता हूँ, मैं चाहता हूँ कि आप 50 ईस्वी को यरूशलेम परिषद के रूप में जानें, इसलिए हम इस पर वापस आने वाले हैं लेकिन 50 ईस्वी यरूशलेम परिषद है। अब पहली मिशनरी यात्रा कब हुई? यरूशलेम परिषद से पहले। तो प्रेरित पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा यरूशलेम परिषद से पहले हुई, यरूशलेम परिषद 50 ईस्वी में है। यह उससे ठीक पहले की बात है। तो यह सिर्फ 46-48 ईस्वी है। प्रेरित पौलुस की तीनों मिशनरी यात्राएँ कहाँ से शुरू होती हैं? वे सभी यहाँ से शुरू होती हैं, सीरिया में अन्ताकिया। अन्ताकिया नामक एक जगह है और यहीं से पौलुस की

तीनों मिशनरी यात्राएँ अन्ताकिया से शुरू होती हैं। क्या आपको याद है कि अन्ताकिया वह पहली जगह है जहाँ ईसाइयों को ईसाई कहा जाता था और हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखेंगे, वास्तव में ईसाइयों को तीन उपाधियों से जाना जाता है - मार्ग के लोग, इसलिए यह मार्ग एक बड़ी बात है। मार्ग और वास्तव में NIV में आप इसे बड़े W के साथ देखेंगे। उन्हें संप्रदाय भी कहा जाता था, ईसाई कुछ इस तरह के थे, यहूदी धर्म के अंदर उन्हें "नाज़रीन" कहा जाता था। इसलिए उन्हें फरीसी, सद्दूकी और अब नाज़रीन के रूप में देखा जाता था, क्योंकि वे नाज़रेथ के व्यक्ति, यीशु मसीह का अनुसरण करते थे। फिर उन्हें सबसे पहले अन्ताकिया में ईसाई कहा गया, इसलिए सीरिया में अन्ताकिया। अब जब मैं सीरिया में अन्ताकिया कहता हूँ तो इससे आपको क्या पता चलता है? क्या कई अन्य अन्ताकिया होने जा रहे हैं? यह वारसों, इंडियाना कहने जैसा है। मुझे इंडियाना कहना ही होगा क्योंकि अगर मैं सिर्फ वारसों कहूँगा तो आपको वारसों, पोलैंड याद आ जाएगा।

तो क्या होता है, पॉल अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर जाता है और आत्मा उसे बुलाती है, और वे किसके साथ जाते हैं? यह प्रेरितों के काम 13 में है, और पहली मिशनरी यात्रा पर क्या होता है। मैं बस शुरू करता हूँ, पवित्र आत्मा ने कहा कि मेरे लिए बरनबास और शाऊल को अलग करो। बरनबास, वास्तव में उनके नाम का अर्थ है "सांत्वना का पुत्र।" बरनबास उनका उपनाम था। वह एक बड़ा आदमी लगता है जो दूसरों को प्रोत्साहित करता था। उन्होंने विशेष रूप से प्रेरित पॉल के साथ काम किया जो शाऊल था।

याद रखें कि आरंभिक चर्च शाऊल को पसंद नहीं करता था क्योंकि शाऊल ईसाइयों को मार रहा था। इसलिए जब शाऊल ने वास्तव में ईसाई धर्म अपना लिया तो कुछ ईसाइयों ने कहा, "यह आदमी पहले भी लोगों को मार रहा था। मुझे यकीन नहीं है कि हम उस पर भरोसा कर सकते हैं। क्या वह घुसपैठ करने और हमें भी मारने की कोशिश करने जा रहा है? इसलिए लोगों ने उसे कठोर रूप से रोका। बरनबास शाऊल को ले गया और उसे समुदाय में ले आया। इसलिए बरनबास एक तरह से शांतिदूत और मेल-मिलाप कराने वाला और एक अच्छा आदमी था, "सांत्वना का बेटा।" यहाँ तक कि इस परिसर में भी मेरा मानना है कि हमारे पास बरनबास समूह हैं, वे प्रोत्साहन देने वाले हैं, वे अपने प्रोत्साहन के लिए जाने

जाते हैं। "मैंने जिस काम के लिए बरनबास और शाऊल को बुलाया है, उसके लिए उन्हें अलग कर दो, इसलिए जब वे उपवास और प्रार्थना कर चुके तो उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्हें भेज दिया।" इसलिए ये लोग *प्रेरित* हैं, उन्हें भेजा गया है। ध्यान दें कि समुदाय की भूमिका सिर्फ पॉल और बरनबास का यह कहना नहीं है कि, "भगवान ने हमें बुलाया है और इसलिए हमें जाना चाहिए।" नहीं, समुदाय उन्हें बुलाता है और स्वीकार करता है और समुदाय उन्हें मंजूरी देता है, और कहता है, "आप लोग जा सकते हैं," और वे बाहर चले जाते हैं।

वे सबसे पहले कहाँ जाते हैं? वे सबसे पहले साइप्रस जाते हैं। यह द्वीप सीरिया के तट से कुछ दूर और तुर्की के ठीक नीचे है। मुझे वहाँ रहने वाले और पूरी दुनिया में रह चुके एक व्यक्ति से जो बताया गया है, उसके अनुसार साइप्रस दुनिया की सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है। मैं वहाँ कभी नहीं गया। मैं वहाँ जाना चाहता हूँ, लेकिन रिचर्ड क्लीव ने साइप्रस के बारे में जिस तरह से बात की है, वह एक बहुत ही खूबसूरत जगह है। वे एंटीओक से साइप्रस क्यों गए? खैर, वह बरनबास का गृहनगर है। बरनबास यहीं से था, साइप्रस। तो बरनबास कह रहा है कि वह अपने गृह क्षेत्र में ईसाई धर्म का प्रसार करना चाहता है।

सेंट पाफोस , साइप्रस [65:45-67:52]

तो वह यहाँ जाता है, वे यहाँ पाफोस जाते हैं, और मूल रूप से क्या होता है, वहाँ एक आदमी है जिसका नाम बार- जीसस है जो वहाँ है और एक गवर्नर सर्जियस पॉलस है, बार- जीसस का अर्थ है "जीसस का पुत्र" और वैसे, उस समय कई जीसस थे। मुझे लगता है कि कुछ लोगों को लगता है कि जीसस एक विशेष नाम है, बस यह समझें कि जीसस जोशुआ का हिब्रू नाम है। प्रश्न: क्या जीसस के दिनों में बहुत सारे जोशुआ थे? हाँ, थे। हम रिकॉर्ड से जानते हैं कि, जब आप रिकॉर्ड में वापस जाते हैं तो आप देख सकते हैं कि उस समय बहुत सारे जीसस थे। इसलिए वे नासरत के जीसस कहते हैं। यहाँ आपको यह बार - जीसस मिला है, वह एक जादूगर है। क्या होता है कि यह बार -जीसस जादूगर आता है और गवर्नर सर्जियस पॉलस के सामने पॉल के साथ झगड़ा करता है वह इसे देखता है और आश्चर्यचकित हो जाता है। यह आश्चर्यजनक है कि क्या हुआ और मूल रूप से सर्जियस पॉलस तब विश्वास करने के

लिए आश्चस्त हो जाता है क्योंकि उसने इस आदमी को अंधा होते देखा था। वह कहता है, "वाह, इस आदमी को भगवान की शक्ति मिली है," और इसलिए वह विश्वास करता है। तो क्या सबूतों, संकेतों, चमत्कारों और विश्वास के बीच कोई संबंध है? और इसका उत्तर है हाँ, कम से कम इस मामले में तो था। अब सभी मामलों में ऐसा नहीं होता, लेकिन इस मामले में ऐसा था। इसलिए सर्जियस पॉलस मसीह को स्वीकार करता है, वह राज्यपाल है, बार- यीशु कुछ समय के लिए अंधा हो जाता है। यह साइप्रस में होता है।

अब आगे क्या होता है, और मैं इन जगहों पर एक-एक करके जाना चाहता हूँ। साइप्रस, बार- यीशु, सर्जियस पॉलस का मानना है कि बार- यीशु अंधा है।

पैम्फिलिया दक्षिण मध्य तुर्की में टी. पेरगा [67:52-70:11]

अब वे चल पड़े और यहाँ पेर्गा तक पहुँचे। अब पेर्गा में कुछ होता है, पेर्गा में प्रेरितों के काम 13 में, वास्तव में प्रेरित पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा पूरी तरह से प्रेरितों के काम 13 है। प्रेरितों के काम 13:13 बरनबास और पौलुस के बाद जॉन मार्क आता है जो एक युवा व्यक्ति है। जॉन मार्क एक धनी परिवार से है। वह संभवतः वह व्यक्ति है जिसने मार्क की पुस्तक लिखी है। वह उस समय एक युवा व्यक्ति था। वास्तव में वह रिश्तेदार था, वह बरनबास का भतीजा था जॉन मार्क पेर्गा में काम छोड़ देता है। इसलिए, जॉन मार्क संभवतः यरूशलेम में संभवतः अन्ताकिया में घर वापस चला जाता है। जॉन मार्क काम छोड़ देता है। मुझे बस यह पढ़ने दें, "पौलुस और उसके साथी पेरगा के लिए रवाना हुए ... जहाँ जॉन ने उन्हें छोड़ दिया और यरूशलेम लौट आया।" इसलिए वह यरूशलेम वापस चला गया। अब आप कहते हैं कि यह कोई बड़ी बात नहीं है, वह बस घर वापस चला गया। यह एक बड़ी बात थी, और वास्तव में पॉल इतना परेशान हो गया कि जब वे दूसरी मिशनरी यात्रा पर निकले तो पॉल ने कहा, मैं इस बार जॉन मार्क को अपने साथ नहीं ले जा रहा हूँ। मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं ले जा रहा हूँ जो इस तरह से छोड़ देता है। पॉल ने दूसरी मिशनरी यात्रा पर जॉन मार्क के साथ जाने पर आपत्ति जताई। बरनबास और पॉल के बीच तनाव इतना बड़ा है कि इसने उनकी दोस्ती को तोड़ दिया। वास्तव में बरनबास ने जॉन मार्क को लिया और साइप्रस वापस

चला गया, पॉल ने सीलास को लिया और बरनबास और जॉन मार्क के साथ नहीं गया, उसने किसी और को चुना, सीलास। पॉल दूसरी मिशनरी यात्रा पर अकेले ही निकल गया। इसलिए जॉन मार्क को लेकर पॉल और बरनबास के बीच तनाव इतना गहरा था कि इसने उनकी दोस्ती को तोड़ दिया। ये लोग एक साथ युद्ध से गुज़रे थे। पॉल और बरनबास वास्तव में बहुत करीब थे क्योंकि उन्होंने जो कुछ भी सहा था। तो जॉन मार्क पेरगा में छोड़ देता है।

वैसे, मुझे लगता है कि हमने पहले भी ऐसा किया है, लेकिन मुझे 2 तीमुथियुस 4:11 का यह अंश बहुत पसंद है, जिसमें पॉल अपने जीवन के अंत में, पॉल जानता है कि वह मरने वाला है, संभवतः 68 ई. के आसपास, वह तीमुथियुस से कहता है, "जॉन मार्क को बुलाओ और उसे यहाँ मेरे पास लाओ क्योंकि वह मेरे और मेरी सेवकाई के लिए लाभदायक है।" तो जॉन मार्क अपने जीवन के अंत में, पॉल और जॉन मार्क का मेल-मिलाप हो जाता है। पॉल पूछता है कि जॉन मार्क को उसके पास लाया जाए। इससे पहले, पॉल का उससे कोई लेना-देना नहीं था क्योंकि उसने नौकरी छोड़ दी थी। तो यह पेरगा में है।

यू. पिसिडिया में एंटीओक [70:41-73:05]

अब, पॉल एंटीओक की ओर जाता है और आप कहते हैं, "ओ, नहीं, एक और एंटीओक।" यह प्सिडियन एंटीओक है। हमारे पास इतने सारे एंटीओक क्यों हैं? इसका एक कारण यह है कि एंटीओकस नाम का एक आदमी था और सिकंदर के दिनों से याद है, एंटीओकस था, और उसने इन सभी जगहों का नाम रखा और लोगों ने उनके नाम उसके नाम पर रखे।

तो यहाँ क्या होता है? प्रेरितों के काम 13 में वे प्सिडिया में अन्ताकिया पहुँचते हैं, इसे गलातिया कहा जाता है। एक तरह से उत्तरी गलातिया और एक तरह से दक्षिणी गलातिया है और इस पर बहुत बहस होती है लेकिन हम इसे यहाँ दक्षिणी गलातिया ही कहेंगे। तो वह अन्ताकिया जाता है और अध्याय 13 की आयत 44 और उसके बाद यह कहता है, "सब्त के दिन लगभग पूरा शहर प्रभु का वचन सुनने के लिए इकट्ठा हुआ। अब जब यहूदियों ने भीड़ को देखा तो वे ईर्ष्या से भर गए और पौलुस की बातों के खिलाफ़ बुरा-भला कहने लगे," पौलुस

जवाब देता है, “चूँकि तुम इसे अस्वीकार करते हो और अपने आप को अनन्त जीवन के योग्य नहीं समझते, इसलिए अब हम अन्यजातियों की ओर मुड़ते हैं।” तो अन्ताकिया में, मूल रूप से यहाँ पौलुस क्या करता है, पौलुस एक शहर में जाता है। सबसे पहले वह यह देखता है कि आराधनालय कहाँ है, वह अंदर जाता है और पहले सप्ताह वह एक यात्रा करने वाले रब्बी की तरह व्यक्ति है इसलिए वह आराधनालय में प्रचार करता है और आम तौर पर लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं। पॉल एक बुद्धिमान और बहुत अच्छा उपदेशक है। अगले हफ्ते भीड़ दोगुनी हो जाती है और वास्तव में शहर से लोग आते हैं, लेकिन वास्तव में जो होता है वह यह है कि सभी भीड़ के साथ यहूदी ईर्ष्यालु हो जाते हैं। फिर जब वे ईर्ष्यालु हो जाते हैं, तो वे पॉल के संदेश का विरोध करना शुरू कर देते हैं और फिर वे आम तौर पर उसे बाहर निकाल देते हैं, उसे पीटते हैं, उसे पत्थर मारते हैं, पॉल के साथ कुछ बुरा करते हैं या पॉल भाग जाता है। यहाँ आप देख सकते हैं कि पॉल पहली बार आराधनालय में उपदेश देता है, लोग इसे सुनते हैं। अगली बार जब सभी शहर के लोग आते हैं, तो यहूदी ईर्ष्यालु हो जाते हैं और विरोध होता है। पॉल का कहना है कि मूल रूप से इस बिंदु पर, अब हमने यहूदियों को सुसमाचार की पेशकश की है, अब हम अन्यजातियों की ओर मुड़ रहे हैं। तो आप यहाँ सिसडिया में एंटीओक में होने वाली अन्यजातियों के इस मोड़ को देख सकते हैं।

वी. इकोनियम [73:05-74:18]

वहाँ से अन्ताकिया, वह इकुनियुम जाता है। और इकुनियुम पर मैं बहुत लंबा विचार नहीं करना चाहता, यह भी दिलचस्प है, प्रेरितों के काम 13:48 में कहा गया है, “जितने अनन्त जीवन के लिये नियुक्त हैं, उन्होंने विश्वास किया।” तो आपको स्वतंत्र इच्छा की तरह मिलता है, क्या यह उनका चुनाव था कि वे विश्वास करें या यह पूर्वनिर्धारित था कि वे विश्वास करें, और यह प्रेरितों के काम में आता है। यह रोमियों की पुस्तक के बाहर एक दिलचस्प बात है कि उसी तरह की पदावली का उपयोग किया गया है। तो इकुनियुम में क्या होता है? इकुनियुम में पॉल फिर से प्रचार करता है और जो होता है वह यह है कि अन्ताकिया के कुछ यहूदी मन में जहर लेकर आते हैं। पॉल को मारने और उससे छुटकारा पाने के लिए इकुनियुम में एक

साजिश है। पॉल को साजिश के बारे में पता चलता है और वह लुस्ता भाग जाता है। क्या भागने का

कभी समय होता है? **वेस्ट लिस्ता : देवता बनाए गए/पत्थरबाज़ किए गए [74:18-79:40]**

जब वह लुस्ता पहुँचेगा, तो लुस्ता एक विशेष स्थान होगा। आपको यह जानना होगा कि यहाँ कई ऐसी चीज़ें होती हैं जो बहुत महत्वपूर्ण हैं। सबसे पहले, वास्तव में मुझे इसे जाँचने दें, अध्याय 14 में पद 12, और यहाँ लुस्ता में जो होने जा रहा है वह कई स्तरों पर बहुत दिलचस्प है। "इकुनियुम में, पॉल और बरनबास हमेशा की तरह एक यहूदी आराधनालय में गए, उन्होंने वहाँ इतने प्रभावशाली ढंग से बात की कि बहुत से यहूदी और गैर-यहूदी विश्वास करने लगे, लेकिन जिन यहूदियों ने विश्वास करने से इनकार कर दिया, उन्होंने गैर-यहूदियों को भड़काया और भाइयों के खिलाफ उनके मन में ज़हर भर दिया। इसलिए, पॉल और बरनबास ने प्रभु के लिए साहसपूर्वक बोलने में काफी समय बिताया, जिन्होंने अनुग्रह के संदेशों की पुष्टि की।" वहाँ एक साजिश चल रही थी और मूल रूप से उन्हें इसके बारे में पता चला और वे लुस्ता भाग गए। अब यहाँ लुस्ता में क्या हुआ। "लुस्ता में एक अपंग व्यक्ति बैठा था जो जन्म से लंगड़ा था और कभी नहीं चला था। जब पॉल बोल रहा था, तो उसने सुना। पॉल ने सीधे देखा और पाया कि उसके पास चंगा होने का विश्वास है।" विश्वास और उपचार के बीच संबंध पर ध्यान दें, "और पुकारा, 'अपने पैरों पर खड़े हो जाओ!' इस पर वह आदमी उछलकर चलने लगा।" यह शायद एक छोटा शहर था। शहर में हर कोई जानता है कि यह आदमी अपंग है। वह जन्म से ही अपंग है, वह आदमी अचानक अपने पैरों पर खड़ा हो गया और उछल-कूद करने लगा। और जब भीड़ ने देखा कि पॉल ने क्या किया है तो वे लाइकोनियन भाषा में चिल्लाए, "याद रखें कि हमने कैसे कहा कि ये द्वंद्वात्मक क्षेत्रीय भाषाएँ हैं, इसलिए "वे लाइकोनियन भाषा में चिल्लाए, देवता मानव रूप में नीचे आ गए हैं! और उन्होंने बरनबास को ज़ीउस और पॉल को हर्मीस कहा क्योंकि वह मुख्य वक्ता था।" तो आपको क्या मिलता है कि उन्हें पहले लिस्ता में देवता कहा जाता है। वह इस अपंग व्यक्ति

को ठीक करता है और शहर के लोग निष्कर्ष निकालते हैं कि ये लोग देवता ही होंगे, जिन्होंने इस व्यक्ति को चलने लायक बनाया। बरनबास जाहिर तौर पर पॉल से बड़ा था और बरनबास को ज़ीउस माना जाता है और पॉल को हेमीज़ माना जाता है क्योंकि वह मुख्य वक्ता है। यह एक तरह से पैगंबर की तरह है जो भगवान के लिए बोलता है और ज़ीउस ज़्यादा कुछ नहीं बोलता लेकिन हेमीज़ हर समय बोलता रहता है।

पॉल और थेक्ला के कृत्यों के बारे में एक दिलचस्प वर्णन है, जहाँ हम बाद में पहुँचेंगे जहाँ पॉल को छोटे कद, गोल-मटोल, गंजा सिर वाला बताया गया है, शायद यह अच्छा है, मैं पॉल की तरह हूँ, एक नुकीली नाक वाला और वह बहुत मिलनसार है। यदि आप मध्य पूर्वी संस्कृति में रहे हैं, तो वह भूमिका के लिए उपयुक्त है, वहाँ ऐसे बहुत से लोग हैं।

अचानक से बुरी चीज़ें होने लगती हैं, यहूदियों की ओर से विरोध शुरू हो जाता है और अचानक से लोग चले जाते हैं, और वे पॉल पर बहुत क्रोधित हो जाते हैं, वे क्या करते हैं? कुछ यहूदी अन्ताकिया और इकुनियुम से नीचे आए थे, इसलिए यह एक तरह से लोगों में फैल गया और भीड़ को अपने पक्ष में कर लिया। उन्होंने पॉल को पत्थर मारे और उसे शहर के बाहर घसीट कर ले गए, यह सोचकर कि वह मर चुका है। तो यहाँ प्रेरित पॉल को इस हद तक पत्थर मारे गए कि लोगों को लगा कि वह मर चुका है। वे उसे शहर से बाहर घसीट कर ले गए और उसे शहर से बाहर फेंक दिया। इसलिए वह एक अपंग को ठीक करता है, वे लिस्त्रा, ज़ीउस और हर्मीस में देवता बना दिए जाते हैं, और फिर यहूदियों द्वारा उनके दिमाग में ज़हर भर दिए जाने के बाद, पॉल को इस हद तक पत्थर मारे गए कि उन्हें लगा कि उन्होंने उसे मार दिया है और उसे शहर से बाहर घसीट कर ले गए।

वैसे, क्या इससे उसका शरीर टूट जाएगा? अन्य लोगों ने सुझाव दिया है कि पॉल की आँखों में समस्या थी और संभवतः उसके सिर पर पत्थर लगने से उसकी आँखें फूट गईं। आप कभी नहीं जान सकते, हम इसके बारे में सभी विवरण नहीं जानते। हम जानते हैं कि पॉल के शरीर में एक काँटा था, जिसे दूर करने के लिए उसने तीन बार ईश्वर से प्रार्थना की थी। हम जानते हैं कि एक अन्य स्थान पर पॉल ने कहा है, तुम मेरे लिए अपनी आँखें फोड़ लेते। तो शायद उसकी आँखों में कुछ ऐसा है जो परिणामस्वरूप खराब है। लिस्त्रा वह स्थान है जहाँ

पॉल को लगभग मृत्यु की स्थिति तक पत्थर मारे गए थे, उसे अपंग को ठीक करने के कारण वहाँ एक देवता बना दिया गया था। क्या आप देखते हैं कि भीड़ कितनी चंचल है, भीड़ उसे एक महान ईश्वर चंगा करने वाला बताकर उसकी जय-जयकार कर रही है और फिर कुछ ही छंदों के बाद वे उसे पत्थर मारकर मार डालते हैं। इसलिए मैं कह रहा हूँ कि आप भीड़ पर भरोसा नहीं कर सकते, भीड़ एक मिनट में प्रशंसा करती है और फिर दूसरे मिनट में।

दूसरी बात, मैं अभी यहाँ हूँ, तो मैं यह कहना चाहूँगा कि लुस्त्रा वह स्थान है जहाँ पौलुस को बुरी तरह पीटा गया, पहले अपंग को ठीक करने के लिए उसे देवता बनाया गया और फिर उसे पत्थर मारकर मार डाला गया। यह लुस्त्रा से ही है जहाँ से प्रेरित पौलुस अपने सबसे वफादार शिष्यों में से एक को खींचता है और वह है तीमुथियुस। तीमुथियुस लुस्त्रा से होगा, वह स्थान जहाँ पौलुस को पत्थर मारकर मार डाला गया था; तीमुथियुस लुस्त्रा से होगा। इसलिए वह उसे लेने जा रहा है, पहली मिशनरी यात्रा पर नहीं जिस पर हम अभी हैं, बल्कि भविष्य में लगभग 4, 5, 6 साल बाद दूसरी यात्रा पर वह उसे ले जाएगा।

x. डर्बी और पहली मिशनरी यात्रा का अंत [79:49-81:24]

वह डर्बी जाता है, आखिरकार, और डर्बी में मिशन का एक दिलचस्प तरह का निष्कर्ष निकलता है। प्रेरितों के काम 14:22 में, यहाँ बताया गया है कि डर्बी में पहली मिशनरी यात्रा कैसे समाप्त होती है और पॉल यह निष्कर्ष निकालता है। "हमें परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए कई कठिनाइयों से गुजरना होगा।" और इसलिए पॉल इस चिंतनशील नोट पर अपनी पहली मिशनरी यात्रा समाप्त करता है। मसीह के सुसमाचार की घोषणा करने में बहुत पीड़ा होती है, "परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए हमें कई पीड़ाओं से गुजरना होगा।" फिर पॉल लुस्त्रा, इकुनियुम और अन्ताकिया से होते हुए अपने कदमों को वापस लेता है। धीरे-धीरे घर की ओर बढ़ता है। यह पहली मिशनरी यात्रा है, जो लगभग 46-48 ईस्वी में होती है।

प्रथम मिशनरी यात्रा के बाद पॉल अन्ताकिया से वापस आने वाला है, वह यरूशलेम जाने वाला है, और वे 50 ई. में यरूशलेम परिषद का आयोजन करने जा रहे हैं। पीटर भी वहाँ

नीचे जाएगा। तो, यह प्रथम मिशनरी यात्रा है, अब, वास्तव में 48-49 ई., इसलिए यरूशलेम परिषद से ठीक पहले दक्षिणी गलातिया में प्रथम मिशनरी यात्रा है।

Y. जॉन मार्क ने क्यों छोड़ा? [81:24-82:44]

जी: कंबाइन YZ; 81:24-90:11; जॉन मार्क क्रिटिंग, जेरूसलम काउंसिल

जॉन मार्क ने क्यों नौकरी छोड़ी? हमने इस बारे में बात नहीं की, लेकिन कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि जब वे पहली बार टर्की पहुंचे तो जॉन मार्क ने नौकरी छोड़ दी क्योंकि उन्हें घर की याद आ रही थी, वे एक छोटे बच्चे थे, उन्हें घर की याद आ रही थी। अन्य लोगों का सुझाव है और मुझे लगता है कि शायद यह सही भी है कि जब वे टर्की पहुंचे तो पॉल ने पदभार संभालना शुरू कर दिया। जब वे साइप्रस में थे तो बरनबास शायद मुख्य किरदार था, क्योंकि वह साइप्रस से था, अंकल बार्नी, लेकिन जब वे टर्की पहुंचे तो बरनबास को पीछे की ओर धकेल दिया गया और पॉल प्रमुख वक्ता बन गए। यह संभव है कि जॉन मार्क अपने चाचा के साथ जो कुछ हो रहा था, उससे थोड़ा नाराज थे। जॉन मार्क और पॉल के बीच तनाव प्रतीत होता है और यह संभव है कि जब सत्ता बरनबास से पॉल के पास चली गई, तो पॉल स्पष्ट रूप से अविश्वसनीय रूप से प्रतिभाशाली थे, जिससे जॉन मार्क थोड़ा निराश हो गए और उस समय उन्होंने भाग लिया। तो इसके कुछ संभावित कारण हैं, हम नहीं जानते, जाहिर है मैं सिर्फ यह सुझाव दे रहा था कि उनके नौकरी छोड़ने के संदर्भ में और जब कोई आपको धोखा देता है तो आप कैसे प्रतिक्रिया करते हैं? मुझे लगता है कि इसका कुछ हिस्सा पॉल के साथ है, जॉन मार्क ने उन्हें धोखा दिया और जब वे इसमें शामिल हुए, तो उन्हें बचा लिया, पॉल को लगभग मौत के मुंह में धकेल दिया जाएगा और भरोसा फिर से बनाना वाकई मुश्किल है। एक बार जब कोई आपको धोखा दे देता है, तो आप बस यह नहीं कह सकते कि मैं उन्हें माफ कर देता हूं, बस मैं उन्हें माफ कर देता हूं। भरोसा फिर से स्थापित करना होता है और भरोसा समय लेता है।

जेड. अन्यजातियों के लिए सुसमाचार: फ़िडिया में अन्ताकिया और यरूशलेम परिषद

[82:44-90:11]

वे अन्ताकिया और प्सिडिया तक जाते हैं और हमने कहा कि वे आराधनालय में जाते हैं और वे हमेशा आराधनालय से ही शुरू करते हैं तीसरे सप्ताह यहूदी ईर्ष्यालु हो जाते हैं, और अन्ताकिया में वे अन्यजातियों की ओर मुड़ते हैं और अन्यजातियों को सुसमाचार का प्रचार करना शुरू करते हैं, जो वैसे, अन्यजातियों को सुसमाचार का प्रचार करना ईस्वी सन् 50 में यरूशलेम परिषद का केंद्र बिंदु होने जा रहा है। क्या अन्यजातियों को ईसाई बनने के लिए यहूदी बनना पड़ा या क्या अन्यजाति सीधे ईसाई धर्म में जा सकते हैं। दूसरे शब्दों में, क्या उन्हें खतना करवाना पड़ता है? तो, ईर्ष्या एक चर्च में कैसे घुसती है? एक आराधनालय में, एक चर्च में, ईर्ष्या एक बड़ी चीज है। अब, इकोनियम, वे सुसमाचार का प्रचार करते हैं, वहाँ विश्वास है, वहाँ अविश्वास है और एक साजिश है और इकोनियम में इस साजिश के बारे में हमने कहा, जिससे वे भाग गए। और मूल रूप से भागने का समय है, लिस्त्रा में वह अपंगों को ठीक करता है, उन्हें देवता बना दिया जाता है, ज़ीउस बरनबास है और हर्मीस पॉल है। फिर पॉल को इस हद तक पत्थर मार दिया जाता है कि उन्हें लगता है कि पॉल मर चुका है। दूसरी मिशनरी यात्रा पर, टिमोथी लिस्त्रा से आएगा। टिमोथी के पिता एक यूनानी हैं और उनकी माँ यहूदी हैं। यह सिर्फ जनता की राय की चंचलता को दर्शाता है और फिर डर्बी।

वैसे, यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, इसलिए दुख और विकास के बीच एक संबंध है। कोई कहता है, आप कैसे जानते हैं कि कोई व्यक्ति परिपक्व हो रहा है, दुख और परिपक्वता के बीच एक संबंध है। यह हर जगह होता है, मुझे लगता है कि सुकरात ने कहा था, "दुख ज्ञान लाता है," सभोपदेशक 1:18, बाइबल में उन छंदों में से एक है जिनसे मैं नफरत करता हूँ, मूल रूप से कहता है कि आपको ज्ञान प्राप्त करने का एकमात्र तरीका दुख के माध्यम से है और यह कठिन है।

तो ईसाई धर्म का विपणन करने का क्या मतलब है। हम ईसाई धर्म को सफलता के रूप में प्रचारित करते हैं और आप मसीह का अनुसरण करते हैं और आपका जीवन अच्छा चलेगा, लेकिन यह जरूरी नहीं कि सच हो। पॉल का सिर काट दिया जाएगा और पीटर को उल्टा सूली पर चढ़ा दिया जाएगा। मसीह का अनुयायी होने के नाते, यह आपको कहाँ ले

जाता है? यह आपको कूस तक ले जाता है। कूस वह जगह है जहाँ हम किस्मत में हैं, जरूरी नहीं कि धन-संपत्ति हो।

यह तो पहली मिशनरी यात्रा है, जो मूल रूप से साइप्रस और दक्षिणी गलातिया क्षेत्र में फैली हुई है। यह यरूशलेम परिषद से ठीक पहले 48-49 ईस्वी की पहली मिशनरी यात्रा है। अब, यरूशलेम परिषद, हमने इसके बारे में बात की है और अब आइए इस यरूशलेम परिषद और क्या हो रहा है, के बारे में कुछ विवरण जोड़ें। मूल प्रश्न यह है: गैर-यहूदियों को चर्च में कैसे स्वीकार किया जाता है? क्या गैर-यहूदियों को पहले यहूदी बनना पड़ता है? आरंभिक ईसाई सभी यहूदी थे, इसलिए उनका खतना हुआ था। इसलिए, यदि आप यहूदी हैं और आप ईसाई बन जाते हैं तो कोई समस्या नहीं है, लेकिन यदि आप गैर-यहूदी हैं और आपका खतना नहीं हुआ है, तो आपको ईसाई बनने के लिए पहले खतना करवाना होगा। इसलिए आरंभिक चर्च में इस पर एक बड़ी बहस हुई। यही यरूशलेम परिषद है। क्या गैर-यहूदी पहले यहूदी बने बिना ईसाई बन सकते हैं? यानी क्या गैर-यहूदियों का खतना नहीं होना चाहिए। ईसाई बनने के लिए बुनियादी बातें क्या हैं? आपको क्या करना चाहिए?

मुझे प्रेरितों के काम 16 में यह श्लोक बहुत पसंद है, जहाँ हम इसे दूसरी मिशनरी यात्रा पर देखेंगे, जहाँ फिलिप्पी के जेलर ने पूछा, "मुझे उद्धार पाने के लिए क्या करना चाहिए?" पॉल ने कहा, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो और तुम उद्धार पाओगे।" यह अपनी सादगी में पूरे शास्त्र में सबसे स्पष्ट कथनों में से एक है। यह अद्भुत है, और विद्वान इसे जटिल बनाने की कोशिश करेंगे, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करो और तुम उद्धार पाओगे।" अब हम सवाल पूछते हैं, विश्वास करने का क्या मतलब है? और यह एक अच्छी बात है लेकिन यह एक सुंदर कथन है।

अब, यरूशलेम परिषद में वे कुछ शर्तें रखते हैं, यरूशलेम परिषद का वर्णन प्रेरितों के काम 15, ई. 50 में किया गया है। पहली मिशनरी यात्रा कब हुई थी? इस ई. 50 से ठीक पहले यरूशलेम परिषद थी, वैसे दूसरी मिशनरी यात्रा कब हुई थी? दूसरी मिशनरी यात्रा ई. 50 के ठीक बाद होगी जो विभाजन बिंदु है। पहली मिशनरी यात्रा, यरूशलेम परिषद, दूसरी मिशनरी यात्रा। और यहाँ प्रेरितों के काम की पुस्तक के अध्याय 15 में कहा गया है, जब तक

कि आप खतना नहीं करवाते, मूसा द्वारा सिखाई गई प्रथा के अनुसार आप बच नहीं सकते, कुछ लोग कह रहे थे, "नहीं, हम मानते हैं कि यह हमारे प्रभु यीशु मसीह की कृपा से है कि हम वैसे ही बच गए हैं जैसे वे हैं।" इसलिए उन्हें मूल रूप से बताया गया था कि उन्हें खतना करवाने की आवश्यकता नहीं है।

उन्होंने उन्हें कुछ चीजें बताईं जो उन्हें करनी थीं, खून नहीं खाना, यह जरूरी नहीं कि मोक्ष के लिए चीजें हों, लेकिन यह सिर्फ इतना था कि अगर गैर-यहूदी और यहूदी चर्च में एक साथ एक शरीर में आने वाले हैं तो कुछ चीजें हैं जो यहूदी लोगों के लिए अपमानजनक हैं। आपको चर्च में अन्य लोगों के प्रति शिष्टाचार के कारण ये चीजें नहीं करनी चाहिए, उनमें से एक है खून नहीं खाना, दूसरा है यौन अनैतिकता नहीं, यह सिर्फ इसे स्पष्ट करता है। पुराने नियम में इसे स्पष्ट रूप से व्यभिचार के साथ-साथ बिना किसी व्यभिचार के भी बताया गया है, लेकिन वे इसे सिर्फ दोहराते हैं। कोई मूर्ति मांस नहीं, मूर्तियों को चढ़ाए गए मांस को नहीं खाना और यह बाद में कुरिन्थियों की पुस्तक में कुछ जांच के दायरे में आएगा। इसलिए इन चीजों को बड़े पैमाने पर निर्दिष्ट किया गया था कि उन्हें खतना नहीं करवाना था, लेकिन उन्होंने समुदाय के लिए कहा कि कोई खून नहीं, कोई यौन अनैतिकता नहीं, और कोई मूर्ति मांस नहीं।

इसलिए पॉल लिखते हैं, संभवतः जब गलातियों की पुस्तक लिखी जाती है, तो इस पर बहस होती है। पहली मिशनरी यात्रा पॉल अन्यजातियों की ओर मुड़ता है, वह अन्ताकिया वापस जाता है... लेकिन ऐसा करने से पहले, वह लिखता है कि वह संभवतः गलातियों के पत्र को अपना पहला पत्र लिखता है। मेरे अच्छे मित्र डेव मैथ्यूसन को लगता है कि थिस्सलुनीकियों को वास्तव में पहले लिखा गया था और गलातियों को थोड़ा बाद में लिखा गया था, लेकिन ईमानदारी से कहें तो इस पर बहस है। मुझसे बेहतर विद्वान हैं, और डेव NT में उनमें से एक हैं, और वे कहते हैं कि 1 थिस्सलुनीकियों को पहले लिखा गया था, गलातियों को मैं अभी लिखूंगा, पॉल ने पहली मिशनरी यात्रा पूरी कर ली है, यरूशलेम परिषद ने अपना निर्णय ले लिया है और फिर पॉल गलातियों को पत्र लिखता है। इसलिए वह गलातिया में उन लोगों को पत्र लिखता है, जिनके पास वह अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर गया था। फिर पॉल

गलातियों को लिखता है और इसलिए जब हम इस नोट को पढ़ते हैं, जब कई पत्र लिखे जाते हैं। तो यह गलातियों को पहले लिखा जाएगा।

अब दूसरी मिशनरी यात्रा, वे यरूशलेम से वापस अन्ताकिया जाने के लिए आते हैं क्योंकि जैसा कि हमने कहा, पॉल की तीनों मिशनरी यात्राएँ सीरिया के अन्ताकिया से शुरू होती हैं इसलिए वह फिर से अन्ताकिया वापस जाने वाला है। क्यों न हम इस बिंदु पर विराम लें और हम अगली बार दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्रा करेंगे।

रॉब हुसेलैंड और टिमोथी कैर
द्वारा लिखित टेड हिल्डेब्रांट द्वारा संपादित रफ